प्रार्थना सुमन
(भजन)

संकलन–सम्पादन–रचनाकार

कंचन कुमार

208–B पश्चिम विहार एक्सटेंशन
नई दिल्ली –110 063

प्रकाशक :

दीप्ति प्रकाशन

प्रकाशक :

दीप्ति प्रकाशन

208-B पश्चिम विहार एक्सटेंशन, नई दिल्ली–63

वितरक :

गायत्री सत्संग सभा

208-B पश्चिम विहार एक्सटेंशन, नई दिल्ली–63

~~संकलन–सम्पादन–रचनाकार~~

कंचन कुमार

फोन : 25217058, 9868204664

सेवा : 25/– रुपये मात्र
35/– रुपये (सजिल्द)

मुद्रक :

शाकुंतलम ग्राफिक्स

फोन : 27157307, 9818050590

जनहित में प्रसारित एवं वितरित

आपकी प्रेरणा से

प्रभुवर मुझको ऐसा वर दे।
लिखूं तेरी महिमा ऐसा कर दे।।
झुके जो तेरे ही चरणों में।
इस ''कंचन'' को ऐसा सर दे।।

आत्मउद्गार

जीवन संगीत

भजन, गीत एवं संगीत मनुष्य की आत्मा को आवेशों की लहरों में डूबने के लिए संसार में नहीं छोड़ देते बल्कि उसे उन लहरों में खेलते हुए पार उतरने की शक्ति देते हैं। उनमें जीवन का अमर संदेश है, जीवन की प्रेरणा है और ऐसी पूर्णता है जो ह्दय के सब अभावों को भर देती है।

गीत संगीत मनुष्य के मन को बांधता है तन को प्रफुल्लित करता है। संगीत हमारी संस्कृति में प्रकृति के सौन्दर्य का उदगम माना गया है। भारतीय संगीत का आरम्भ 6000 ई0 पू0 माना गया है। हमारे ऋषि मुनियों ने संस्कृत के वेदों की रचना की एवं मंत्रों का संगीतमय ध्वनि में उच्चारण किया। उसके बाद गीत एवं संगीत हमारी संस्कृति से, जनजीवन से धार्मिक पर्वों एवं सांस्कृतिक उल्लासों के माध्यम से जुड़ता चला गया।

गीत संगीत की परिभाषा केवल मानवीय गायन तक ही सीमित नहीं वरन इसके अन्दर पशुओं की विविध बोलियां, पक्षियों की चहचहाट, वायु की सनसनाहट, कीट पतंगों का मधुर गुन्जन, एवं प्राकृतिक वातावरण की मनोरम छटा का भी प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

ऊपर से गिरते झरनों को देखें तो तेज गति से गिरता व बहता हुआ जल अपने प्रवाह मार्ग के आघात प्रतिघातों से चोट खाता भंवर बनाता कल–कल ध्वनि से आगे बहता घाटियों पर्वतों पहाड़ियों जंगलों में प्रतिध्वनि होकर संगीत का पर्याय बन जाता है।

वृक्षों की डालियों पर असंख्य पक्षी आनन्द से चहचहाते फुदकते फिरते अपने

कलरव से प्रकृति की छटा में संगीत गुन्जायमान करते है।

वृक्षों की झूमती डालियां, पक्षियों की चहचहाट एवं उनमें अठखेलियां करती वायु प्राकृतिक संगीत का रूप धारण कर लेती है।

गाय, भैंस, भेड़, बकरी कितने जीव जन्तु रम्भाते एवं मिमियाते हैं भंवरे मधु–मक्खियां, कोयल, बुलबुले, चिड़ियां बाग बगीचों में अपने स्वर से संगीतमय वातावरण उत्पन्न करती है।

वर्षा ऋतु की रिमझिम बरसती फुहार के संगीत में कोयल की कूह–कूह सुनाई देने लगती है। बादलों, घटाओं की गर्जना में भी मोर पंख फैला कर नृत्य करने लगते हैं। मौन पशु पक्षी अपने अपने क्रिया कलापों से संगीत का आनन्द अपने व्यवहार से व्यक्त करते हैं। बीन की आवाज सर्प जब सुन लेता है तो वह भी अपने बिल या झाड़ी से निकल कर अपने फन को ऊँचा उठाकर नृत्य करने, झूमने लगता है। गीत संगीत कानों को ही प्रिय नहीं लगता बल्कि ह्दय को भी धैर्य तथा आनन्द देने वाला होता है। इसके प्रभाव से अनेक आत्माओं को सांसारिक समस्याओं एवं मस्तिष्कीय परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है। प्रस्तुत पुस्तक प्रार्थना सुमन में उसी आत्मिक आनन्द को समेटने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है, कितना सफल होगा इसका मुल्यांकन तो प्रबुद्ध गीत संगीत प्रेमी भक्त ही करेंगे।

प्रभु करे कि इस प्रयास से प्रत्येक मानव के जीवन में नई चेतना का संचार हो।

शुभकामनाओं सहित

–कंचन कुमार

प्रार्थना

हे सर्वशक्तिमान प्रभु तुम सर्वान्तर्यामी हो। हे सर्वेश्वर, सर्व व्यापक प्रभु तुम अनादिकाल से, अनन्तकाल से संसार पर अपने उपकारों की वर्षा करते हो। हम जानते हैं कि मेघों की ओट में तुम ही मधुर हास्य करते हो। अरूण किरणों में हमने तुम्हारे चरणों को स्पर्श किया है। झरनों, नदियों, जलप्रपातों, जलधारा की कल कल में तुम्हारा ही स्वर है। हे प्रभो, तुम ही विश्व के कण कण में व्याप्त हो। तुम्हारा प्रताप ही वन, पर्वत आकाश, सागर, सूर्य, अग्नि, जल पृथ्वी के विविध रूपों में व्याप्त है। सावन भादों की जलधारा, कंपन करते पत्तों में तुम्हारा ही गीत है। चंचल सुवासित पवन में, नदी की तरंगों पर तुम ही नृत्य करते हो। सावन के बादलों में तुम्हारा ही उन्माद है।

हे जगदीश्वर, हम जानते है तुम्हारा प्रेम ही पत्ते–पत्ते पर स्वर्णाभा बनकर चमक रहा है। तुम्हारे प्रेम से ही अलसाए मेघ आकाश में झूम रहे हैं। तुम ही चुपके से नीरव रात्री में चले जाते हो और प्रभात की स्वर्णबेला में चले आते हो। पक्षियों, जीव जन्तु, एवं जलचर चौपायों में तुम्हारा ही गुन्जन सुनाई देता है। प्राणी मात्र की आकांक्षाओं कामनाओं को तुम ही प्रतिपल पूर्ण करते हो। तुम्हारी छाया में ही परम तृप्ति है।

हे पावन–प्रभो, तुम ही आषाढ़ की संध्या में बरसात की जलधारा, जलकण में, तुम ही बसन्त शिशिर के द्वार खोलते हो। प्रकृति की अनुभूति में तुम्हारा ही गीत है। तुम्हारा प्रकाश वृक्षों के पत्तों पर नृत्य कर ह्दय को उल्लास से भरता है। तुम्हारा प्रकाश ही पक्षियों को कलरव प्रदान करता है, ह्दय को दिव्य आनन्द से भरता है।

हे जगत पिता, जहां तक दृष्टि जाती है तुम्हारी सृष्टि में मंगल ही मंगल दिखाई देता है। तुम न जाने कहां से धरती पर प्रकाश पराग बिखेरते हो। समुद्र में अनमोल

हीरे, मोती, रत्न, पन्नों के खजाने तुमने ही भरे हैं। हम नहीं जानते कि कौन से राग पर नन्दन वन के यौवन का मद जाग उठता है। आम्र–मंजरी की सुगन्ध में, नये पल्लवों के राग पर, चन्द्रकिरण की सुधा से भीगे आकाश में, अश्रुओं के आनन्द भरे स्पर्श में कौन सी वस्तु है उससे वायु पुलकित हो उठती है।

हे प्रभो, हमारी हृदय रूपी वीणा की तारों में तुम्हारा ही स्पन्दन है। लेकन हम युगों–युगों से आपको नहीं देख पाते हैं। हे नाथ, तुम ऐसा कर दो कि हम तुम्हारा प्रेम पा सके। ऐसी कृपा करो कि हम अपना जीवन तुम्हारी भक्ति, पूजा, सिमरन एवं संसार के प्राणीमात्र की सेवा में लगा सकें।

जगतपिता परमेश्वर, हममे सच्ची श्रद्धा हो। तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठ कर अपनी सभी प्रकार की आसुरी प्रवृतियों पर विजय पाने वाले बने। हे परमेश्वर, मन को मैला करने वाली भावनाओं, स्वार्थ, संकीर्णताओं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, ईर्ष्या आदि कुटिल भावनाओं को हम दूर करें।

प्रभो, अपने गीतों, भजनों के पंख से हम तुम्हारे चरणों का स्पर्श करना चाहते हैं। हे प्रभो कृपा करो, मानसरोवर की ओर जाने वाले हंस जिस तरह दिन रात रूके बिना उड़ान भरते रहते हैं उसी तरह हम भी जीवन पथ एवं महा मृत्यु के पथ पर बढ़ते रहे। हे जगदीश्वर, हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो तथा हम विद्या एवं ज्ञान से पूर्ण बने।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

भजन

1.	प्रार्थना सुमन	3	
2.	मुद्रक विवरण	4	
3.	आपकी प्रेरणा से	5	
4.	आत्म उद्‌गार	6	
5.	प्रार्थना	8	
6.	भजन सूची	10	
7.	ईश्वर स्तुति	13	
8.	परम पिता से प्रीत	14	
9.	सत्संग वाली नगरी	15	
10.	सांचा प्रभु का नाम	16	
11.	तूझे फूलों में देखूं	17	
12.	क्यों दूर है इस भक्ति से	18	
13.	हम आये शरण तुम्हारी	19	
14.	एक याद तुम्हारी याद रहे	20	
15.	मुझे है काम ईश्वर से	21	
16.	मत खोलो प्रभु जी मेरा खाता	22	
17.	तृष्णा न जाये मन से	23	
18.	छुक–छुक रेल चली	24	
19.	उद्धार करो भगवान	25	
20.	दुख भी मुझे प्यारे हैं	26	
21.	धीरे–धीरे मोड़ इस मन को	27	
22.	तेरे चरणों में	28	
23.	नमस्कार–नमस्कार	29	
24.	नमस्कार भगवान तुम्हें	30	
25.	हर पल में हो	31	
26.	ग़ज़ल	32	
27.	कोई कछु कहे मन लागा	33	
28.	सुन नाथ अरज अब मोरी	34	
29.	हे जगपिता हे प्रभु	35	
30.	नदी किनारे	36	
31.	सेवक हैं हम तुम्हारे	37	
32.	डूबतों को बचा लेने	38	
33.	तुम बिन हमारा कौन	39	
34.	भोर भई उठ जाग मन	40	
35.	पानी में मीन प्यासी	41	
36.	नाम प्रभु का लिया करो	42	
37.	प्रभु तेरा ओ३म् नाम	43	
38.	करते हैं तेरा गुणगान	44	
39.	उठ नाम सिमर	45	
40.	सारे जहाँ के वाली	46	
41.	स्वर्ग नरक है इस धरती पर	47	
42.	जिस घर में एक दूजे	48	
43.	आनन्द स्त्रोत बह रहा	49	
44.	तेरा रब नहीं बसदा दूर	50	
45.	कुछ न बिगड़ेगा तेरा	51	
46.	जागो रे दौलत के	52	
47.	तू ही एक सहारा	53	
48.	उस प्रभु की शरण आओ रे	54	
49.	राम नाम अति मीठा	55	
50.	मंदिर है भगवन का	56	
51.	जो भजे हरि तेरो नाम	57	
52.	मेरे प्रभु तुम बिन	57	
53.	सदियों से जीवन भटकता	58	
54.	जिस आदमी का	59	
55.	मन का दीया तो	60	
56.	मानव तू अगर चाहे	61	
57.	हे नाथ दयालु हो	62	
58.	जगत में चिन्ता	63	
59.	तेरी मेहरबानी का	64	
60.	एक तेरी दया का	65	
61.	जलायें दीप कुछ ऐसे	66	
62.	तेरी रहमतों का	67	

63. ईश्वर जो करता है 68
64. जे भवसागर तर जा 69
65. काया को नित साजे मूरख 70
66. मुझे रास आ गया है 71
67. कैसी ये दुनिया 72
68. जीवन है ये क्या जीवन 73
69. पागल सब संसार देखा 74
70. वो ही पालन हारा 75
71. कारीगर वो कारीगर 76
72. ओ३म की छाया तले 77
73. हम सब मिल के दाता 78
74. भक्ति कर भगवन की 79
75. कैसी प्रभु तूने कायनात 80
76. तू ने खूब रचा 81
77. कुन्दन बना दो 82
78. मुझे ऐसा वर दो 83
79. मेरे दाता के दरबार में 84
80. ओ३म् करुणानिधान है 85
81. याद करले घड़ी दो घड़ी 86
82. प्रभु जी तेरी लीला 87
83. मुस्कुराना सीख ले 88
84. भगवान के दर पर 89
85. चरणों में तेरे हे प्रभु 90
86. तेरा ही आसरा है 91
87. तेरे नाम का सुमिरन 92
88. जागो रे जिन जागना 93
89. दयालु दया कर 94
90. हे ज्ञान रूप भगवन 95
91. चैन न आए राम 96
92. दुनिया बनाने वाला 97
93. एक झोली में 98
94. शरण में आए हैं हम तुम्हारी 99
95. भजन सुनाता चल 100
96. मेरे देवता मुझको 101
97. भला करो भगवान 102
98. रे मन मुसाफिर 103
99. विज्ञापन 104
100. वरदान जो मिल जाए 105
101. विज्ञापन 106
102. एक बार भजन कर ले 107
103. तू व्यापक डाली डाली है 108
104. प्रभु जी इतनी सी 109
105. ओ३म् जपो मेरी बहना 110
106. प्रभु प्यारे से जिसका 111
107. नर नारी सब 112
108. मिलता है सच्चा सुख 113
109. ओ३म नाम के हीरे मोती 114
110. चंचल मन नित 115
111. सब में ओ३म समाया है 116
112. जीवन की घड़ियां 117
113. नमस्कार भगवान तुम्हें 118
114. तेरे करम से बेनियाज 119
115. ओ३म का सुमिरन 120
116. गायत्री महामाया 121
117. करो गायत्री जाप 122
118. गायत्री गीतिका 123
119. गायत्री मन्त्रार्थ 124
120. गायत्री महिमा 125
121. वो एक है दोहे 126
122. वैराग्य दोहे 127
123. ओ३म ओ३म बोल मनवा 128
124. ओ३म है परम पिता 129

125. न तो देर है 130
126. तेरो नाम सुख की खान 131
127. प्रभु तेरी शरण में 132
128. मेरे प्राणों के आधार 133
129. मांग बन्दे मांग 134
130. ओ३म नाम मन मेरे 135
131. शब्दों में भाव सजे 136
132. इस जग दे विच 137
133. वे जोगिया जग है 138
134. भजन बिना नर बावरे 139
136. परदेसी हँसा 140
137. कोई आए कोई जाए 141
138. दुनिया फानी है ये 142
139. किसने दीप जलाया 143
140. समय का पहिया 144
141. अगर तू चाहता है 145
142. तेरी उम्र गुजरती जाए 146
143. हे परमेश्वर दया करो 147
144. दया करो भगवान 148
145. एक ओ३म् नाम में 149
146. मेरा नाथ तू है 150
147. भगवान मेरी नैया 151
148. एक मन्त्र जपते रहो 152
149. तुम मेरे जीवन के धन 153
150. जिस भजन में ओ३म का 154
151. पीकर प्याला 155
152. मेरे मालिका मैं 156
153. करो मन ओ३म् का 157
154. हर हाल में दाता का 158
155. आओ विचार करें 159
156. ओ३म् नाम भज ले 160
157. गायत्री महिमा (दोहे) 161
158. नही चाहिये 162
159. फोटो भजन गाते हुए 163
160. बहे सत्संग की गंगा 164
161. कभी प्यासे को 165
162. कुछ पल की जिन्दगानी 166
163. वैदिक कीर्तन 167
164. ओ३म् जपा करो 168
165. अपने मन को जरा 169
166.ग़म न करो गर 170
167.मन हरि ओ३म् गा ले 171
168. मनवा ओ३म् नाम तू 172
169. हिम्मत न हारिये 173
169. परमेश्वर के गुण गाने से 174
170. जरा तो इतना बता दो 175
171. रे मनवा ईश्वर के गुण गाना 176
172. मुझे तूने मालिक 177
173. आन बसो मन मेरे 178
174. जीवन की रुलाती 179
175. उसके चरणों में तो 180
176. किसी के काम जो आए 181
177. करम खोटे तो 182
178. हे जगदीवश्वर हे भगवान 183
179. समय बड़ा बलवान रे 184
180. तेरी हीरे जैसी श्वासा 185
181. जीवन खत्म हुआ तो 186
182. तू प्यार का सागर है 187
183. साथ ले लो पिता 188
184. तेरे चरणा विच 189
185. जीवन तुम्हारा तुम्हारे ही 190
186. आरती 191
187. भजन पुस्तक (विवरण) 192

ईश्वर स्तुति

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुष्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्व मम देव देव।।

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्ही हो।
तुम्हीं हो भ्राता सखा हमारे।
तुम्हीं हो विद्या, धन भी तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो सर्वस्व देव प्यारे।

नमस्ते सते ते जगत्–कारणाय।
नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय।
नमो ब्रह्माणें व्यापिने शाश्वताय।

नमस्ते निराकार निर्गुण निरूपम्।
नमस्ते शिवम् सत्य सुन्दर स्वरूपम्।।
नमस्ते अगोचर अगम ओजदायकम।
नमस्ते निरंजन निगम नीतिनायकम।।
नमस्ते महेश्वर महा मोक्षदाता।
नमस्ते विभू विश्वव्यापक विधाता।।
नमस्ते सदा सच्चिदानन्द स्वामी।
नमस्ते नियन्ता प्रणाम नमामि।।

परम पिता से प्रीत

परम पिता से प्रीत लगा, भवसागर से पार हो जा।

सत्संग दे विच आया कर, गुण ईश्वर के गाया कर।
जीवन वेद अनुसार बना, भवसागर से पार हो जा।।

अन्दर है प्रीतम तेरा, मन मंदिर में है डेरा।
ज्ञान की सच्ची जोत जगा, भवसागर से पार हो जा।

चल रही विषयों की अंधेरी, जोत बुझाई जिसने तेरी।
उससे अपना आप छुड़ा, भवसागर से पार हो जा।।

विषयों को नन्दलाल तूं छोड़ परमपिता से नाता जोड़।
जीवन अपना शुद्ध बना, भवसागर से पार हो जा।।

पत्नी का विरह, अपनों से अनादर,
बचा हुआ कर्ज, दुष्ट राजा की सेवा,
दरिद्रता, तथा मूर्खो की सभा,
ये सब बिना अग्नि के मनुष्य को जलाते हैं।

सत्संग वाली नगरी चल रे मना

पी प्रभु ज्ञान का जल रे मना।
सत्संग वाली नगरी चल रे मना।।

इस नगरी में प्रेम की गंगा,
जो भी नहाये हो जाए चंगा।
मल मल के हों निर्मल रे मना।। सत्संग.....

सत्संग के हैं अजब नजारे,
बहुत सुहाने बहुत ही प्यारे।
पा सुख शान्ति का फल रे मना।। सत्संग.....

सत्संग का ये असर हुआ है,
बाहर से सब बदल गया है।
अन्दर से तू बदल रे मना।। सत्संग.....

सत्संग का तो फल है निराला,
मन मंदिर में करके उजाला।
कर जीवन को सफल रे मना।। सत्संग.....

किस्मत का चमका है सितारा,
उदय हुआ है भाग्य हमारा।
अवसर जाये न निकल रे मना।। सत्संग.....

चल रे पथिक शुभ कर्म कमाले,
इस अवसर से लाभ उठाले।
देर न कर इक पल रे मना।। सत्संग.....

सांचा प्रभु का नाम

सांचा बस एक प्रभु का नाम।
मन रे जप ले तू सुबहो शाम।।

वो अमृत का सच्चा सागर।
क्यों भटके तू प्यासा।।
इस अमृत से प्यास बुझा ले।
दूर हो तेरी निराशा।।
शरण में आकर शीश झुकाकर, कर उसको प्रणाम।।

हर मुश्किल में वो ही आकर।
सबको धीर बंधाता।।
भंवर में अटकी नैया को भी ।
वो ही पार लगाता।।
संकट रूपी इस नैया को, पल में लेता थाम।।

वो घट घट की जानन हारा।
वो ही पालन हारा।।
हर निर्बल और दीन दुखी का।
वो ही एक सहारा।।
वो है प्रेम का भूखा प्यारे, मांगे न कोई दाम।।

जैसे फूल में गन्ध, तिलों में तेल, लकड़ी में आग, दूध में घी, गन्ने में गुड़, उसी तरह कण–कण में परमात्मा है। इसे पहचानना चाहिए।

तुझे फूलों में देखूं

तुझे फूलों में देखूं, सितारों मं देखूं।
कण कण में बसा है, नाम तेरा।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

मेरे जीने का, तू है सहारा।
मुझे जान से भी, है तू प्यारा।।
छुप के बैठा है अन्तर में प्रभु मेरा।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

प्रभु मैं मांगू कुछ न तुमसे।
दूर न होना कभी तुम हमसे।।
आके पलको में बस जाओ मेरे भगवन।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

हर सांस में तुझे मिलने की आस है।
ऐसा लगे तू कहीं आस पास है।।
तेरे दर्शन की प्यास बुझाओ भगवन।
जहां देखूं प्रभु तेरा काम देखूं।।

कबिरा कुंआ एक है, पनिहारी अनेक।
बरतन सबके न्यारे है, पर पानी सबमें एक।।

क्यों दूर है इस भक्ति से

तर्ज : ये बन्धन तो प्यार का बन्धन है।

क्यों दूर है इस भक्ति से, प्रभु भक्ति की शक्ति से,
मग़रूर क्यों है मस्ती से, पूछो कुछ इस हस्ती से।
जीवन तो एक दिन जाना है, लौट के नहीं आना है।।

इस मन मन्दिर में वो है उनकी प्यारी मूरत।
जहां भी देखूं वही दिखे उनकी प्यारी सूरत।।
तू कर्महीन क्यों होया, क्यों व्यर्थ की बात में खोया।।
दुनिया जागी तू सोया, जब आंख खुली तो रोया।। जीवन तो...

गुज़रान यहां कुछ दिन की, दुनिया एक सराए।
जग दो दिन का मेला, कोई आए कोई जाए।।
जो चाहो गर कुछ पाना, उस प्रभु का ध्यान लगाना।
जीवन चाहो तर जाना, प्रभु के चरणों में आना।। जीवन तो...

सुन वेदों में बहती है, इक अमृत की धारा।
जिसने पिया ये अमृत, उसने जनम संवारा।।
वो ही तो है महादानी, सब उनकी मेहरबानी।
अब भी छोड़ो नादानी, सुन वेद की अमृत वाणी।। जीवन तो...

रचना :– कंचन कुमार

जो बन्दा खुदी से जुदा हो गया।
खुदा की कसम वो खुदा हो गया।।

हम आए शरण तुम्हारी

हम आए शरण तुम्हारी
हम आए शरण तुम्हारी

तुम हो सारे जग के पालक।
माता–पिता तुम हम हैं बालक।
रक्षा करो हमारी।। हम आए....

काम क्रोध से हमें बचाना।
टूटी नैया पार लगाना।
रैन बड़ी अंधियारी।। हम आए....

इस कुटिया में अमृत भर दो।
रोम रोम मेरा पुलकित कर दो।
तेरे बने पुजारी।। हम आए....

पतितों को हम गले लगाएं।
दुखियों के हम कष्ट मिटाएं।
बन कर हम हितकारी।। हम आए....

मीठे मीठे वचन सुनायें।
फूल बने सबको महकायें।
होकर हम बलकारी।। हम आए....

बुरे भले हैं तेरे भगवन।
आशानन्द हैं तेरे अर्पण।
भिक्षा डाल भंडारी।। हम आए....

एक याद तुम्हारी याद रहे

एक याद तुम्हारी याद रहे।
और दिल में किसी की याद न हो।।
मेरे सुन्दर दिल की बगिया में।
कोई तेरे बिना आबाद न हो।।

ये मेरी निगाहें तेरे ही।
दीदार की भगवन प्यासी हो।।
तेरे दीद बिना दिलबर प्यारे।
ये जीवन यूं बरबाद न हो।।

तेरी याद की मस्ती में खोकर।
भवसागर से तर जाऊं मैं।।
तेरा नाम रहे हर दम लब पर।
बस और कोई फरियाद न हो।।

हर गीत मेरा तेरी भक्ति का।
दीवाना बना दे दुनिया को।।
न वीर रहे कोई दिल ऐसा।
जिस दिल में तुम्हारी याद न हो।।

जिसको हर चीज में भगवान नजर आता है।
मुझे वो आदमी इंसान नजर आता है।।

मुझे है काम ईश्वर से

मुझे है काम ईश्वर से जगत रूठे तो रूठन दे।

बैठ संगत में संतन की, करूं कल्याण मैं अपना।
लोग दुनिया के भोगों में मौज लूटे तो लूटन दे।।
मुझे है काम ईश्वर से.....

कुटुम्ब परिवार सुत द्वारा लाज लोकन की छुटन दे।
हरि के भजन करने में अगर छूटे तो छूटन दे।।
मुझे है काम ईश्वर से.....

भरी थी पाप की मटकी, मेरे गुरूदेव ने झटकी।
वह बह्मानन्द ने पटकी अगर फूटे तो फूटन दे।।
मुझे है काम ईश्वर से.....

जो भी करना कर गुजरो ये दिल की राय है सोचने वाला हमेशा सोचता रह जाये है।

जिस तरह अग्नि का शोला, संग में मौजूद है। उसी तरह परमात्मा, हर रंग में मौजूद है।

मत खोलो प्रभु मेरा खाता

मत खोलो प्रभु जी मेरा खाता।
मेरा जनम जनम का नाता।।

कौन जनम मैंने पाप न किन्हे।
कौन जनम तू ने माफ न कीन्हे।
मैं हूं दीन, तुम हो विधाता।।

खाता मेरा काला प्यारे।
पापों से रंग डाला प्यारे।
मैं हूं याचक तुम मेरे दाता।।

तू ने सबकी झोली भर दी।
तू ने सबकी पीड़ा हर ली।
मेरे अवगुण बख्शो विधाता।।

पूत कपूत भले ही होए।
पिता न अपने प्रण को खोए।
कभी होती न माता कुमाता।।

तीन चीजों में सदा सन्तोष करना चाहिए, अपनी पत्नी में, भोजन में तथा धन में। तीन चीजों में कभी सन्तोष नहीं करना चाहिए, अध्ययन में, जप में तथा दान में।

तृष्णा न जाए मन से

तृष्णा न जाए मन से, भक्ति न आए मन में।
जतन करूं मैं हज़ार, कैसे लगेगी नैया पार।।

इक पल माया, साथ न छोड़े।
जिधर जिधर चाहे मुझे मोड़े।।
प्रभु भक्ति से प्रभु सिमरन से।
मेरा रिश्ता नाता तोड़े।।

माया न जाए मन से, भक्ति न आए मन में।
जीवन न जाए बेकार, कैसे लगेगी नैया पार।।

क्षमा करो मेरे प्रभुवर स्वामी।
चंचलता मन की लाचारी।।
लगन जगा दो मन में स्वामी।
तुम हो प्रभु जी अर्न्तयामी।।

मन न बने अनुरागी, भावना बने न त्यागी।
दया करो करतार, हो कैसे लगेगी नैया पार।।

रहिमन चुप हो बैठिये, देख दिनन के फेर।
जब नीके दिन आयेंगे, बनत न लागे देर।।

छुक–छुक रेल चली

छुक–छुक, छुक–छुक रेल चली है जीवन की।
हंसना, रोना, जागना, सोना, खोना, पाना, सुख, दुख।

छोटी–छोटी सी बातों से मोटी–मोटी खबरों तक।
ये गाड़ी ले जाएगी हमको, मां की गोद से कबरों तक।
सब चिल्लाते रह जाएंगे रूक रूक रूक रूक रूक।।

सामां बांध के रखों लेकिन, चोरों से होशियार रहो।
जाने कब चलना पड़ जाए चलने को तैयार रहो।
जाने कब सीटी बज जाए, सिगनल जाए झुक।।

पाप और पुण्य की गठरी बांधे सत्य नगर को जाना है।
जीवन नगरी छोड़ के हमको दूर सफर पे जाना है।
ये भी सोच ले हमने क्या क्या माल किया है बुक।।

रात और दिन इस रेल के डिब्बे, और सांसों का इंजन है।
उम्र है इस गाड़ी के पहिये, और चिता स्टेशन है।
जैसे दो पटरी हो ऐसे, साथ चले सुख–दुख।।

सांस एक रोज़ हवाओं में बिखर जायेगी।
तेरी मिट्टी कभी मिट्टी में उतर जायेगी।।
किसको मालूम सफर खत्म कहां होता है।
जाने किस मोड़ पे ये रेल ठहर जायेगी।।

उद्धार करो भगवान

उद्धार करो भगवान, तुम्हरी शरण पड़े।
भव पार करो भगवान, तुम्हारी शरण पड़े।।

कैसे तेरा नाम ध्याएं।
कैसे तुम्हारी लगन जगाएं।
ह्दय जगा दो ज्ञान।। तुम्हरी....

पन्थ मतों की सुन–सुन बातें।
द्वार तेरे तक पहुंच न पाते।
भटके बीच जहान।। तुम्हरी....

तू ही श्यामल कृष्ण मुरारी।
राम तू ही, तू ही त्रिपुरारी।
तुम ही बने हनुमान।। तुम्हरी....

ऐसी अन्दर जोत जगा दो।
हम दीनों को गले लगा लो।
हे प्रभु जी दया निधान।। तुम्हरी....

काबू में अपना मन नहीं तो ध्यान क्या करे।
आंखे न करे दीदार तो भगवान क्या करे।।

दुख भी मुझे प्यारे हैं

तर्ज : संसार है एक नदिया

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुख भी मुझे प्यारे हैं।
छोडूं मैं किसे भगवन, दोनों ही तुम्हारे हैं।

सुख–दुख ही दुनिया की, गाड़ी को चलाते हैं।
सुख–दुख की हम सबको, इंसान बनाते हैं।
संसार की नदिया के, दोनो ही किनारे हैं।।

दुख चाहे न कोई भी, सब सुख को तरसते हैं।
दुख में सब रोते हैं, सुख में सब हंसते हैं।
सुख मिले उसके पीछे, दुख ही तो सहारे हैं।।

सुख में तेरा शुक्र करूं दुख में फरियाद करूं।
जिस हाल में रखे मुझे, मैं तुमको याद करूं।
मैंने तो तेरे आगे, ये हाथ पसारे हैं।।

जो है तेरी रज़ा उसमें, देखूं मैं पकड़ कैसे।
मैं कैसे कहूं मेरे, कर्मो के हैं फल कैसे।
चख कर भी न देखूंगा, मीठे है कि खारे हैं।।

दुख की धूप कभी सर पर है, कभी तो है सुख की छाया
बदल बदल कर समय सभी पर बारी बारी आया।।

धीरे धीरे मोड़

तर्ज : धीरे–धीरे बोल कोई

धीरे–धीरे मोड़ तू इस मन को,
इस मन को तू, इस मन को।
मन मोड़ा फिर डर नहीं,
कोई दूर प्रभु का घर नहीं।।

मन लोभी मन कपटी मन है चोर।
कहते आए यह पल–पल में और।।
कुछ जान ले, कुछ मान ले।
होना है विचलित नहीं।। कोई

जप, तप, तीरथ सब होते बेकार।
जब तक मन में रहते भरे विकार।।
बेईमान क्यों, नादान क्यों।
गफलत ऐसे कर नहीं।। कोई

जीत लिया मन फिर ईश्वर नहीं दूर।
जान बूझ क्यों इंसा तू मज़बूर।।
अभ्यास से, बैराग से,
कुछ भी है दुष्कर नहीं।। कोई

माया मरी न मन मरा, मर मर गए शरीर।
आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर।।

तेरे चरणों में

गज़ल

तर्ज : दिल में एक लहर सी

तेरे चरणों में ज़िन्दगी है मेरी।
मैं हूं बन्दा, तू बन्दगी है मेरी।।

तुझ तलक मैं पहुंच नहीं पाता।
चलते रहना ही ज़िन्दगी है मेरी।।

तू मिले तो करार मिल जाए।
ऐसी तकदीर तो नहीं है मेरी।।

तेरी यादों में खो गया है अमर।
दर हकीकत ये बेखुदी है मेरी।।

राह दुश्वार है दूर है मंजिल,
हर कदम को सम्भालना होगा।
पांव में चुभा हुआ हर कांटा,
चलते चलते निकालना होगा।।

जैसे महान पर्वत हवा के झकोरों से विकम्पित नहीं होता वैसे ही बुद्धिमान लोग निन्दा और स्तुति से विचलित नहीं होते।।
–महात्मा बुद्ध

नमस्कार–नमस्कार

आये तेरे द्वार नमस्कार नमस्कार।
सब जग के आधार नमस्कार नमस्कार।।
सर्वाधार प्रभु जी हम आए तेरे द्वार।
हम आये तेरे द्वार, नमस्कार नमस्कार।।

सूरज और चांद में तेरा ही उजाला है।
तूने पहन रखी है सितारों की माला है।
सब जग के आधार नमस्कार नमस्कार।।

पर्वतों की चोटियों को बादल हैं चूमते।
पृथ्वी सूर्य, चांद सितारे गा रहे हैं झूमते।
नियम के अनुसार नमस्कार नमस्कार।।

कोयल की ये कूह–कूह सब के मन को भा रही।
शीतल मन्द पवन मेरा गीत मधुर ही गा रही।
जपत रही सौ बार नमस्कार नमस्कार।।

एक साधे सब सधे, सब साधे जग जाय।
रहिमन मूल ही सींचिये, फुलहि फलहिं अघाय।।

नमस्कार भगवान् तुम्हें

नमस्कार भगवान तुम्हें, भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी, मंगलमय स्वीकार हो।।

तुम कण–कण में बसे हुए हो, तुझमें जगत् समाया है।
तिनका हो चाहे पर्वत हो, सभी तुम्हारी माया है।
तुम दुनिया के हर प्राणी के, जीवन के आधार हो।

सब के सच्चे पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं जगत् की माता हो।
भाई बन्धु सखा तुम्हीं हो, सबके रक्षक दाता हो।
चींटी से लेकर हाथी तक, सब के सिरजन हार हो।

ऋषि मुनी योगी जन सारे, तुम से ही वर पाते हैं।
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे, दर पर शीश झुकाते हैं।।
परम कृपालु परम दयालु, करूणा के आधार हो।

जीवन के तूफानों में प्रभु, तुम ही एक सहारा हो।
डगमग डगमग नैया डोले, तुम ही नाथ किनारा हो।।
तुम खेवट हो इस नैया के, और तुम्हीं पतवार हो।

देख कर पांव रखें, छान का पानी पिए
सत्य बोले मन से पवित्र आचरण करें। –मनुस्मृति

बिना उस प्रभु की कृपा से भरम मन का न जाता है।
करे वो प्रभु दया जिस पर वही सुख शांति पाता है।।

हर पल में हो

तर्ज : झिलमिल सितारों का

हर पल में हो प्रभु सुमिरन तेरा।
ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा।
तेरी सेवा करते करते बीते हर क्षण मेरा।।

याद तेरी को सदा दिल में बसाऊं।
आठों पहर बस तेरे गीत गाऊं।
तेरे चरणों में, रहे मन मेरा।।

ख्वाहिशें जग की न, मुझको सताएं।
चिन्ता हरगिज न नज़दीक आएं।
करता रहूं प्रभु चिन्तन तेरा।

ऐसा तेरी भक्ति में दास खो जाए।
मैं न रहूं बस, तू ही तू हो जाए।
सफल हो जाए नर तन मेरा।।

कट जाने पर भी चन्दन का वृक्ष सुगन्ध नहीं छोड़ता। बूढ़ा हो जाने पर भी हाथी अपनी लीलाओं को नहीं त्याग देता। कोल्हू में पेरी जाने पर भी ईख मिठास को नहीं छोड़ देती। इसी प्रकार गरीब हो जाने पर भी कुलीन अपने शील गुणों को नहीं छोड़ता।

ग़ज़ल

जिन्दगी में भूल कर न पाप कर
हर घड़ी परमात्मा का जाप कर

भक्ति शक्ति मुक्ति मिलती मोल न
जितना भी करना है अपने आप कर

भूल से हो जाये कोई पाप तो।
बैठ कर कुछ काल पश्चाताप कर।।

आयेगा परमात्मा तुझको नजर।
आईना दिल का तू पहले साफ कर।।

राह में कांटे बहुत मंजिल कठिन।
हर कदम चलना सम्भल कर नाप कर।।

**न करने योग्य काम नहीं करना चाहिये।
करने योग्य काम में आलस्य नहीं करना चाहिये।
जिससे नशा चढ़े वो पदार्थ नहीं पीना चाहिये।
काम सिद्ध होने से पहले मन्त्र नहीं प्रकट करना चाहिये।**

**जीवन में गुण अवगुण दो रास्ते हैं
अन्तर केवल ग्रहण करने का है। कर्म किसी के सगे नहीं होते। जैसे अग्नि किसी की सगी नहीं होती। कर्म ही मनुष्य को संसार चक्र में भ्रमण कराते हैं।**

कोई कछु कहे मन लागा

कोई कछु कहे मन लागा।
मन लागा रे लागा।। कछु कहे

ऐसी प्रीत लगा मन मोहना।
ज्यों सोने में सुहागा।। मन

जनम जनम का सोया मनवा।
गुरू के शबद सुन जागा।। मन

मात पिता सुत कुटुम्ब कबीला।
टूट गया जो धागा।। मन

मीरा रे प्रभु गिरधर नागर।
भाग हमारा जागा।। मन

तुलसी अपने राम को रीझ भजो या खीज।
भूमि पड़े सब उपजे हैं उल्टे सीधे बीज।

सुन नाथ अरज

सुन नाथ अरज अब मेरी।
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी।।

तुम मानुष तन मोहे दिन्हा।
भजन प्रभु तुम्हारा नहीं किन्हा।
विषयों ने मेरी मति फेरी।।

सुत दारादिक ये परिवारा।
सब स्वार्थ का है संसारा।
जिन हेतु पाप किये ढेरी।।

माया में ये जीव लुभाया।
रूप नहीं पर तुम्हारा जाना।
पड़ा जन्म मरण की फेरी।।

भवसागर में नीर अपारा।
मोहे कृपालु प्रभु करो पारा।
ब्रह्मानन्द करो नहीं देरी।।

प्रार्थना का उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण बनाना है।
मैले ह्दय से प्रार्थना करना व्यर्थ है।
—महात्मा गांधी

हे जगपिता हे जग प्रभु

हे जगपिता हे जग प्रभु, मुझे अपने नाम का दान दो।
तुझे अपने मन में मैं देख लूं, वह दृष्टि दो वह ज्ञान दो।।

मेरे मन में तेरा ही रंग हो, मेरी प्रार्थना में उमंग हो।
मेरा काम क्रोध से जंग हो, मुझे लोभ मोह से त्राण दो।।

मुझे मेरी भक्ति का फल मिले, मुझे धैर्य शक्ति प्रबल मिले।
मिले जो विचार अटल मिले, मुझे ऐसी ऊंची उड़ान दो।।

तेरी वेदवाणी सुना करूँ, तेरा ओ3म नाम जपा करूँ।
तेरा सामगान सुना करूँ, यही सोच दो यही ध्यान दो।।

मेरा श्रेष्ठतम व्यवहार हो, मेरा उच्चतम आचार हो।
मेरा प्राणियों से प्यार हो, मुझे ऐसा प्यार महान दो।।

ईश्वर नाम अमोल है, दामन बिना बिकाय।
तुलसी अचरज देखिए, कोई ग्राहक न आए।।

वन में सुन्दर खिले हुए फूलों वाला एक ही वृक्ष अपनी सुगन्ध से सारे वन को सुगन्धित कर देता है इसी प्रकार एक ही सुपुत्र सारे कुल का नाम ऊंचा कर देता है।

नदी किनारे

नदी किनारे खड़ा है पगले फिर भी मन है प्यासा।
प्रभु का नाम तो पास है बन्दे फिर क्यों छोड़े आशा।

इस जग की नदियां में देखो प्रभु का जल है प्यारा।
छल छल कल कल निर्मल है जल प्रभु सुमिरन की धारा।
जीवन की गति ऐसो है जस जल में पड़े बतासा।
प्रभु का नाम तो पास है बन्दे फिर क्यों छोड़े आशा।

जल दर्पण तू देख ले मुख को, प्रभु जल ही तन धोता।
निर्मल तन मन हो जावे रे, रोज़ लगा ले गोता।
श्याम दास हरि जल का प्यासा, जीवन तोला मासा।
प्रभु का नाम तो पास है बन्दे, फिर क्यों छोड़े आशा।।

एक ही सूखे वृक्ष में आग लगने पर सारा वन जल जाता है।
इसी प्रकार एक ही कुपुत्र सारे कुल को बदनाम कर देता है।।

सेवक हैं हम तुम्हारे

तर्ज : गुज़रा हुआ जमाना

सेवक है हम तुम्हारे स्वामी है तू हमारा।
मेरे प्रभु तेरा सहारा।।

तेरे सिवा जगत में गमख़ार कोई नहीं है।
जन्मों से भटकी रूह का आधार कोई नहीं है।
मानुष जनम सा अवसर, फिर न मिले दोबारा।।

तू ही है मित्र बन्धु, बान्धव सखा है प्यारा।
माता पिता भी तू है, आराध्य इष्ट हमारा।
कहने को जग है अपना, पर झूठ का पसारा।।

तूने मुझे सुधारा देकर विवेक शक्ति।
ऐ दीन बन्धु दी है अपनी पवित्र भक्ति।
तोड़े जगत के बन्धन माया से करके न्यारा।।

देकर के नाम दासा किरपा अपार की है।
मन की सकल मलिनता पल भर में दूर की है।
उज्जवल किया सुनिर्मल मन को मेरे संवारा।।

फलों से लदा हुआ वृक्ष सदैव झुक जाता है। इस प्रकार यदि आप महान बनना चाहते हैं तो आप नम्र और विनयी बनें।

–राम कृष्ण परम हंस

डूबतों को बचा लेने वाले

डूबतों को बचा लेने वाले।
मेरी नैया है तेरे हवाले

लाख अपनों को मैंने पुकारा,
सब के सब कर गए हैं किनारा।
और कोई न देता दिखाई,
सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा।
कौन तुझ बिना भंवर से निकाले।। मेरी

जिस समय तू बचाने पे आवे,
आग में भी बचा कर दिखावे।
जिस पे तेरी दया दृष्टि होवे,
कैसे उस पे कहीं आंच आवे।
आंधियों में भी तू ही सम्भाले।। मेरी

पृथ्वी सागर व पर्वत बनाए,
तू ने धरती पे दरिया बहाए।
चांद सूरज करोड़ों सितारे,
फूल आकाश में भी खिलाए।
तेरे सब काम जग से निराले।। मेरी

बिन तेरे चैन मिलता नहीं है,
फूल आशा का खिलता नहीं है।
तेरी मरज़ी बिना तो जहां में,
एक पत्ता भी हिलता नहीं है।
तेरे बस में अन्धेरे उजाले।। मेरी

रचना : सत्यपाल "पथिक"

तुम बिन हमारा कौन है

ईश्वर तुम्ही दया करो तुम बिना हमारा कौन है।
दुर्बलता दीनता हरो तुम बिन हमारा कौन है।।

माता तू ही तू ही पिता, बन्धु तू ही तू ही सखा।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है।।

जग को रचाने वाला तू दुखड़े मिटाने वाला तू।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है।।

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर।
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है।।

तेरी लगन तेरा मनन, भक्ति तेरी तेरा भजन।
तेरी ही आते हम शरण, तुम बिन हमारा कौन है।।

पुत्र हैं हम सभी तेरे तू है पिता परमात्मा।
श्रेष्ठ मार्ग पर चला तुम बिन हमारा कौन है।।

जो सबसे प्रेम करता है वही सबसे उत्तम भक्ति करता है।

प्रार्थना वो पंख है जिससे आत्मा स्वर्ग की ओर उड़ती है। ध्यान वो आंख है जिसमें प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।

भोर भई उठ जाग मन

तर्ज : दर्शन दो घनश्याम मोरी

भोर भई उठ जाग जाग मन,
कब से सोया रे।
प्रभु भजन में लाग सवेरा,
कब से होया रे।।

निसि बासर तोहे सन्त जगावें,
तोहे तेरा कारज समझावें।
सुनता न उनकी आवाज़,
नींद में उन्मत सोया रे।।

मोह ममता का देख अन्धेरा,
चित में किया पांचो ने डेरा।
लूटे तुझे दिन रात, माल,
सब तेरा ही खोया रे।।

दास जाग जागन की बेला,
कर साँचे साहिब से मेला।
जन्म लगे न फिर हाथ हाथ,
इस बार भी खोया रे।।

प्रभात में प्रभु की प्रार्थना प्रभु की कृपा खज़ानों को खोलने की कुंजी है। सायं काल में प्रभु की प्रार्थना प्रभु की सुरक्षा में बन्द होने की कुंजी है।

पानी में मीन प्यासी

पानी में मीन प्यासी।
मोहे सुन सुन आवत हांसी।

आत्म ज्ञान बिना नर भटके।
कोई मथुरा कोई काशी।।
जैसे मृगा नाभि कस्तूरी।
बन बन फिरत उदासी।।

जल में कमल, कमल में कलियां।
ता पर भंवर निवासी।।
सो मन बस त्रिलोक भयो सब।
यती यती सन्यासी।।

जाको ध्यान धरे विधि हरिहर।
मुनिजन सहस अठासी।।
वो तेरे घट में ही बिराजे।
परम पुरुष अविनाशी।।

है हाज़िर तोहे दूर बताए।
दूर की बात निरासी।।
कहत कबीर सुनो भई साधो।
गुरु बिन भरम न जासी।।

रंगी को नारंगी कहें, जमे दूध को खोया।
चलती को गाड़ी कहें, देख कबीरा रोया।।

नाम प्रभु का लिया करो

तर्ज : क्या मिलिए ऐसे लोगों से

ए दुनिया में रहने वालो, नाम प्रभु का लिया करो
दिल दुख जाए जिसमें किसी का काम न ऐसे किया करो।

नाम प्रभु का लेने वाले खुशी से सुख दुख सहते हैं।
जिस भी हाल में रखे भगवन, उसी हाल में रहते हैं।
तुम भी सीखो सीख के ज़ख्म किसी के सिया करो।।

धर्म कर्म दो साथ चलेंगे, धन दौलत नहीं जाएगा।
लालच करने वाले लालची, अन्त समय पछताएगा।
बन जाते है नाम से पहले, शीशे जैसा हिया करो।।

दीन दुखी की सेवा करके, प्रभु को खुश कर सकते हो।
पूजा पाठ तपस्या कर भव सागर से तर सकते हो।
हो सके तो इन हाथों से दान धर्म कुछ किया करो।।

आदमी जो कमाता है वह नहीं, जो बचाता है वह उसे धनी बनाता है। पढ़ी हुई नहीं याद रक्खी बातें आदमी को महत्व प्रदान करती हैं। इसी तरह खाया हुआ नहीं, जितना भोजन पचता रहे वही मनुष्य को सशक्त बनाता है।

—महाभारत

प्रभु तेरा ओ३म् नाम

प्रभु तेरा ओ३म् नाम सब का सहारा है।
सारे ब्रह्माण्ड का जीवन आधारा है।।

तू है सुखों का दाता, तू ही भवसागर त्राता।
भक्तों को पार लगाता, मन का उजियारा है।।

जग को रचाने वाला, बिगड़ी बनाने वाला।
दुखड़े मिटाने वाला, सखा तू हमारा है।

कण कण में तू है समाया, तेरी है सब में छाया।
किसी ने न भेद पाया, कैसा ये नजारा है।।

सुखमय संसार बनाया वेदों का ज्ञान कराया।
तेरे ही द्वार मैं आया प्रीतम प्रभु प्यारा है।

तलाशे यार में जो ठोकरें खाया नहीं करते।
कभी वो मंज़िलें मक़सूद को पाया नहीं करते।।

कबीर काजर रेखहू, अब तो डारी न जाई।
नैन में प्रीतम रम रहा, उसमें दूजो कहां समाई।।

करते हैं तेरा गुणगान

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत

कैसा सुन्दर जगत रचाया है तूने भगवान।
करते हैं तेरा गुणगान। करते हैं तेरा गुणगान।।
पृथ्वी सूरज चांद सितारे पर्वत और आसमान।
करते है तेरा गुणगान, करते हैं तेरा गुणगान।।

सेब अंगूर अनार बनाए, रंग बिरंगे फूल खिलाए।
छम–छम, छम–छम वर्षा आए, कोयल मीठे राग सुनाए।
ऋषि मुनि और योगी सारे, धरते तेरा ध्यान।। करते

मानव चोला अजब बनाया, सुई न धागा हाथ लगाया।
नस नाड़ी का जाल बिछाया, आत्मा को इसमें बिठलाया।
द्वार बनाए तूने इसके आंख नाक और कान।। करते हैं

द्वार तेरे पे जो भी आए, जीवन अपना सफल बनाए।
पर उपकार वो करता जाए, नन्दलाल वो न घबराए।
तन मन धन वह धर्म देश पर कर देते कुर्बान।। करते

प्रसन्नता उस तितली के समान है, जिसका यदि पीछा किया जाय तो कभी पकड़ी में नहीं आती, लेकिन शान्तिपूर्वक बैठ जाने पर अपने आप पास आ जाती है।
–हैथर्नि

उठ नाम सिमर

उठ नाम सिमर मत सोय रहो।
मन अन्त समय पछतायेगा।।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया।
फिर हाथ कछु न आयेगा।।

हास विलास में बीती उमरिया।
बहुत गयी रही थोड़ी उमरिया।।
बुझ गया दीपक जल गई बाती।
कोई राह तुझको दिखायेगा।।

पाप बोझ से भर ली गगरिया।
जाना रे तुझ को दूर नगरिया।
जैसा करेगा वैसा भरेगा।
कोई साथ न तेरा निभाएगा।।

ओ३म् नाम धन भर लो ख़जाना।
रहनार नहीं ये देश वीराना।।
प्रभु के चाकर होकर रहियो।
भव सागर से तर जायेगा।।

मन को हमेशा शान्त रखो,
पवित्र विचारों को ह्दय में स्थान दो,
फिर संसार में तुम्हारा कोई विरोध नहीं कर सकता।
–स्वामी रामतीर्थ

सारे जहां के वाली

ओ सारे जहां के वाली, तेरी महिमा अजब निराली।
किसी ने तेरा भेद न पाया है, अजब ईश्वर तेरी माया है।।

जड़े नभ में सितारे, बड़े लगते है प्यारे,
घड़े वेद कैसे सारे, खड़े किसके सहारे। तू बता
दिया रवि ने उजाला, रूप चन्द्रमा का आला,
लिया कौन सा मसाला, सारा जग रच डाला। तू बता
कहीं कड़ीला कड़क, कहीं नभ में भड़क,
अद्भुद रंग रूप दिखाए, यही नहीं समझ में आए।।

कहीं नीला ये गगन कहीं शीतल पवन,
कहीं वन उपवन, कहीं उजड़ा चमन। हे पिता
कहीं डालियो में फूल, कहीं फूल काले शूल,
कहीं कन्द कहीं मूल, कहीं कोई नहीं भूल। हे पिता
कहीं झाड़ बे पहाड़ कहीं बीहड़ उजाड़।
ये सब कुछ कौन रचाए, यही नहीं समझ में आए।।

कहीं नदियों की धार, कहीं सागर अपार,
कहीं रेत के अम्बार, कहीं माया के भण्डार हैं यहां।
कहीं पक्षियों की डार, कहीं पेड़ो की कतार,
कहीं भंवरों की गुन्जार, कहीं स्वरों की झंकार है यहां।
कहीं बैर और प्रीत, कहीं प्यार भरे गीत,
ये सब कुछ कौन सुनाए, यही नही समझ में आए।।

कोई करोड़ों का वाली, कोई जेब से है खाली,
कोई मनाता दीवाली, कैसी बात ये निराली। हे पिता
कोई प्रीतम के संग, करे रास और रंग,
कोई भोजन से भी तंग, कोई अंग से भी भंग। हे पिता
कोई सुन्दर सुडौल, कोई कुरूप बेमोल,
हम देख देख चकराये, यही नहीं समझ में आए।।

स्वर्ग नरक है इस धरती पर

स्वर्ग नरक है इस धरती पर नहीं गगन के देखो पार।
अच्छा कर्म तो सुख देवे है बुरा कर्म है दुख का सार।।

जो दुख पाता प्रभु से कहता क्यों प्रभु दुख तुम देते हो।
हमने किया नहीं कुछ ऐसा फिर क्यों नहीं सुख देते हो।
याद नहीं है उस प्राणी को, जन्म जन्म के पाप का भार।।

एक फकीर जो नंगा सोवे तन ढकने को नहीं बसन।
दुख सह कर मन निर्मल होगा करले करले पीर सहन।
दंड भोग के पाप कटेगा, कारागार बना संसार।।

सुख दुख दोनों एक समाना, दोनों प्रभु के हैं वरदान।
अंधकार तो दिन भी संग में यही प्रभु का परिचय ज्ञान।
प्रभु का सुमिरन नारायण कर दुख का जो करता संहार।।

पहले काटों को भी सीने से लगाया करते थे।
आज कोई फूल भी देता है तो डर लगता है।।

जिस घर में एक दूजे

तर्ज : मुझे इश्क है तुम्ही से

जिस घर में एक दूजे की बात जाये मानी
उस घर कभी न आए कोई भी परेशानी।।

आकाश में नहीं है स्वर्गो की कोई दुनिया।
बेकार के भरम में भटकी हुई है दुनिया।
वो ही घर है स्वर्ग होता जिसमें हो मधुर वाणी।।

माता पिता की सेवा भी फर्ज है हमारा।
माता पिता से ही है नामों निशां हमारा।
माता पिता की आज्ञाा जाती है जहाँ मानी।।

सन्तान पैदा करके जो आजाद छोड़ देते।
माता पिता वो एक दिन सिर को पकड़ के रोते।
बच्चों पे शुरू से ही रखते जो है निगरानी।।

सन्तान जब बड़ी हो डण्डे से न मनाओ।
गर्मी को छोड़ करके फिर प्यार को अपनाओ।
जहाँ प्यार है वहीं है सुख चैन की निशानी।।

जैसे कुम्हार ऊपर से बर्तन को चोट मारता है
लेकिन अन्दर से बर्तन को सहारा देता है
वैसे ही ऊपरी ताड़न से बच्चे दोषमुक्त होते हैं।

आनन्द स्त्रोत

तर्ज : वो दिल कहां से लाऊँ।

आनन्द स्त्रोत बह रहा, पर तू उदास है।
अचरज है जल में रहकर मछली को प्यास है।।

फूलों में ज्यों सुवास, ईख में मिठास है।
भगवान का त्यों विश्व के कण कण में वास है।।

टुक ज्ञान चक्षु खोल के देख तो सही।
जिसको तू ढूंढता है वो तेरे पास है।।

कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है।।

आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक।
कि जब तलक 'प्रकाश' तू इन्द्रियों का दास है।।

सज्जनों का साधारण बात में कहा हुआ वचन पत्थर पर लिखे अक्षर सरीखा होता है, और तुच्छ आदमी की कसम खाकर दिया हुआ वचन भी पानी पर खिंची लकीर सा होता है।

–शेक्सपियर

तेरा रब नहीं वसदा दूर

तेरा रब नहीं वसदा दूर, वे अंखिया खोल ज़रा।
वे अंखिया खोल ज़रा, वे अंखिया खोल ज़रा।।

फूल बास मुख दर्पण न्याई, व्याप रहा घट घट के माही।
मैं मेरी कर दूर, वे अंखिया खेल ज़रा।

बिन सत्संग मिले नहीं मारग, आरफ कहंदे कोल है शाह रब
हर वेले भरपूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

ज्यों पत्थर विच आग समावे, बिन पुरूषार्थ नज़र न आवे।
सत्संग करो ज़रूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

बिन सत्संग न सोझी पावे, मुरशद बिन राह हथ न आवे।
खास ए गल मशहूर, वे अंखियां खोल ज़रा।।

''मैं'' नू मार मुकावे जेड़ा, साफ करे हर दिल दा वेड़ा।
कह दे दिलो ग़रूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

पूरा सतगुरू जे मिल जावे, निज घट दे विच घर दिखलावे।
परगट होवे नूर, वे अंखिया खोल ज़रा।।

जिस तरह आग के साथ धुंआ रहता है उसी तरह हर अच्छे काम के साथ उसका एक बुरा पहलु भी होता है। हमें उन कामों में लगना चाहिए, जिनका बुरा पहलू छोटे से छोटा हो और जिनकी अच्छाई की कोई सीमा न हो।

–स्वामी विवेकानन्द

कुछ न बिगड़ेगा तेरा

कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण आने के बाद।
हर खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।

जब तलक है भेद मन में, कुछ नहीं बन पाएगा।
रंग लाएगी ये भक्ति, भेद मिट जाने के बाद।।

फूलों से पूछो के उन पर, कैसे छाई है बहार।
कब तलक कांटों पे सोया, डाल कर आने के बाद।।

प्रेम की मंजिल में राही, कष्ट आते हैं जरूर।
बीज फलता है सदा, मिट्टी में मिल जाने के बाद।।

कौन करता है किसी को, याद मर जाने के बाद।
सूंघता कोई नहीं है फूल मुरझाने के बाद।।

देख कर काली घटा को, ए भौंरे मत हो उदास।
बंद कलियाँ भी खिलेगी, रात ढल जाने के बाद।।

ज़िन्दगी विषयों में खोई, हरि भजन भी न किया।
होश में आया है इंसा, ठोकरे खाने के बाद।।

जिस खुशी को ढुंढता फिरता है दुनिया में सदा।
वो खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।।

जागो रे

जागो रे, ऐ दौलत के दीवानों।
जागो रे ऐ दौलत के दीवानों।।

दौलत लड़का दे सकती पर, पुत्र दिलाना मुश्किल है।
दौलत नौकर दे सकती पर, सेवक पाना मुश्किल है।।
दौलत औरत दे सकती पर, पत्नी नहीं दिला सकती।
दौलत बिस्तर दे सकती, पर नींद कभी न ला सकती।।

ऐनक मिलती दौलत से, पर नैन कहां से लाओगे।
रोटी मिलती दौलत से, पर भूख कहां से लाओगे।।
दौलत से बादाम मिलेंगे, पर ताकत न आएगी।
सुख दिलाएगी ये दौलत, शांति नहीं दिलाएगी।।

कुछ पैसे में जाकर सज्जनों, ज़हर अभी ले आओगे।
बीस करोड़ में भी अमृत की, बूंद एक न पाओगे।।
दौलत गीता दे सकती है, पर ज्ञान नहीं दे सकती है।
दौलत मंदिर दे सकती, भगवान नहीं दे सकती है।।

धन से सुर्खी पाउडर ले लो, सुन्दरता न पाओगे।
बाजा ले लो दौलत से पर, कंठ कहां से लाओगे।।
लाख सितारे चमके रवि बिन दूर अंधेरा न होगा।
आत्म ज्ञान के बिना सुखों का कभी सवेरा न होगा।।

तू ही एक सहारा

तू ही एक सहारा प्रभु जी।
तू ही एक सहारा।।
दूर नगरिया कठिन डगरिया।
डोले मन दुखियारा।। तू ही

गहरी नदिया जोश में पानी।
डोल रही है नाव पुरानी।।
सूझे नहीं किनारा प्रभु जी।
तू ही एक सहारा।। तू ही

कौन है किसको नाथ पुकारुं।
किसके द्वार पे हाथ पसारुं।।
और न कोई द्वारा प्रभु जी।
तू ही एक सहारा।। तू ही

सौप दिए मन प्राण तुम्ही को।
जीवन के सब काम तुम्ही को।।
तू ही खेवन हारा प्रभु जी।
तू ही एक सहारा।। तू ही

जिस आदमी को पढ़ने का शौक होता है वह मूर्ख नहीं रहता। भगवान का भजन करने वाले को पाप नहीं रहता, चुप रहने वाले की किसी से लड़ाई नहीं होती और जागने वाले को भय नहीं रहता।

—गीता प्रवचन से

उस प्रभु की शरण आओ रे

तर्ज : मैं ससुराल नहीं जाऊंगी

उस प्रभु की शरण आओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

दुनिया में जो तू पाता है,
देने वाला वो दाता है।
उसका ध्यान लगाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

मोह माया और कपट को त्यागो,
आलस छोड़ो नींद से जागो।
भक्ति में मन को लगाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

समय अमोलक तुम नहीं खोना,
वर्ना पड़ेगा बाद में रोना।
नेकी कर्म कमाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

प्रेम का प्याला पीओ मस्ती से,
हरि गुण गाओ सब भक्ति से।
जीवन सफल बनाओ रे,
बेड़ा पार तेरा होगा।।

रचना : कंचन कुमार

राम नाम अति मीठा है

राम नाम अति मीठा है कोई गा के देख ले।
आ जाते हैं राम कोई, बुला के देख ले।।

मन भगवान का मंदिर है यहां मैल न आने देना।
हीरा जन्म अनमोल है, प्यारे इसको गंवा न देना।
शीश दिए हरि मिलते हैं, लुटा के देख ले।।

जिस मन में अभिमान भरा भगवान कहां से आए।
घर में हो अंधकार भरा प्रकाश कहां से आए।
राम नाम की ज्योति ही जला के देख ले।।

गीध अजामिल गणिका ने ऐसी करी कमाई।
नीच करम को करने वाला तर गया सदन कसाई।
पत्थर से हरि प्रगटे हैं, प्रगटा के देख ले।।

आधे नाम पे आ जाते, हो कोई बुलाने वाला।
बिक जाते हैं राम मिले कोई मोल चुकाने वाला।
कोई जो हरि आके मोल चुकाने वाला।
कोई जो हरि आके मोल लगा के देख ले।।

लुढ़कते पत्थर पर काई नहीं जमती। काम में आने वाले लोहे पर जंग नहीं लगता। पुनः पुनः प्रयत्न करने वाला हारता नहीं।

मौन के वृक्ष पर शांति के फल लगते हैं। अभाव के वृक्ष पर क्रान्ति के फल लगते हैं।

मंदिर है भगवान का

न यह तेरा न यह मेरा, मंदिर है भगवान का।
पानी उसका भूमि उसकी, सब कुछ उसी महान का।।

हम सब खेल खिलौने उसके, खेल रहा है करतार रे।
उसकी ज्योति सबमें चमके, सब में उसी का प्यार रे।
मन मंदिर में दर्शन कर ले, उस प्राणों के प्राण का।।

तीर्थ जाये मंदिर जाये, अनगिन देव मनाए रे।
दीन रूप में प्रभु खड़े हैं, देख के नैन चुराए रे।
मन की आंखे खुल जाये तो, क्या करना और ज्ञान का।।

कौन है ऊँचा कौन है नीचा, सब है एक समान रे।
प्रेम की ज्योति जगा हृदय में सब में प्रभु पहचान रे।
सरल हृदय को शरण में राखे, प्रभु भोले नादान रे।।

सुसंग और कुसंग दो ऐसी बातें है जो हमारे जीवन को बना सकती है और बिगाड़ सकती है। कुसंग में चाहे तुम कुछ भी गलत बात न सीखों पर दुनिया में बदनाम अवश्य ही हो जाओगे। मदिरा के पात्र में चाहे दूध ही हो पर संसार उसे मदिरा ही समझेगा। इसीलिए कभी कुसंग में न जाएं।

—सन्त ज्ञानेश्वर

जो भजे हरि तेरो नाम

जो भजे हरि तेरो नाम, सो ही परम पद पाई राम।।

हरि की शरण में आ के करे जो, हरि चरणों में प्यार।
उसको किस दुश्मन का डर, जिसको हरि नाम आधार।।

चाहे जग से भाग ले कोई, मन से सके न भाग।
सच्चाई को मान ने अब तो, गहरी नींद से जाग।।

जाको राखे साइयां, मार सके न कोय।
बाल न बांका कर सके, जो जग बैरी होय।।

मेरे प्रभु तुम बिन

मेरे प्रभु तुम बिन कौन सहारा।
जीवन रैन बहुत अंधियारा।
दीपक प्यार तुम्हारा।। मेरे प्रभु

इस जग में पग पग पर धोखा।
सौ कांटों ने राह को रोका।
तुमने कांटे फूल बनाए।
भूल गए दुख सारा।। मेरे प्रभु

मेरी नैया को डर कैसा,
जिसका खेवट हो तुम जैसा।
ले जाएगी नाव जहां पे,
होगा वहीं किनारा।। मेरे प्रभु

सदियों से जीव भटकता

सदियों से जीव भटकता पर चैन कभी न पाया।
सौ बार मरा जी जीकर फिर भी जीना न आया।।

पशुओं वृक्षों में घूमा, पर पर उपकार न सीखा।
नया पाप करने की खातिर सीखा नित नया तरीका।
पशु पुरूष में क्या अंतर यह ज्ञान अभी न आया।।

तह करके ताक पे रख दी, जीवन की सभी किताबें।
या खून पिया निर्धन का या विषयों की जहर शराबें।
प्रभु नाम के अमृत रस का इस जाम न पीना आया।।

निर्धन गरीब तड़पा भी, पर तेरी दया पिघली ना।
पत्थर बन गया कलेजा, सीमेंट बन गया सीना।
सीने से सी ना निकली, एक ज़ख्म न सीना आया।।

कभी मोर पपीहा बनकर, पीपी ना कभी पुकारा।
सत्संग की वर्षा ऋतु में, मन धोकर नहीं निखारा।
कई बार तेरे जीवन में, सावन का महीना आया।।

इस चौरासी के चक्कर ने, तुझे यूं चक्कर में डाला।
इस जीवन तख्ती पर, कई बार सवाल निकाला।
हर बार गलत ही निकला, इक बार सही न आया।।

तेरे कर्मो का लेखा जोखा, जब प्रभु ने देखा भला।
नत्थासिंह सर से पैरों तक, तेरा जीवन निकला काला।
सब पुण्य पड़ गये फीके, पापों का पसीना आया।।

जिस आदमी का

तर्ज : इस रेशमी पाज़ेब की

जिस आदमी का सर झुके भगवान के आगे।
सारी दुनिया झुकती है उस इन्सान के आगे।।

खुले आकाश में उड़ती पतंगे, साथ में डोरी।
उसे क्या डर भला जिसकी प्रभु के हाथ में डोरी।
ताकत फीकी पड़ती है उस बलवान के आगे।।

बसे वह देवता बन कर ज़माने के ख्यालों में।
उसी के नाम के चर्चे अंधेरों में उजालों मे।
सूरज भी क्या चमके उसकी शान के आगे।

बड़े से भी बड़ा लालच उसे फिसला नहीं सकता।
मुसिबत के दिनों में, वह कभी घबरा नहीं सकता।
उसको ठहरा पाओगे हर तूफान के आगे।

वह सारे इम्तहानों में हमेशा पास होता है।
पथिक जीवन की राहों में न कभी उदास होता है।
मंज़िल खुद आ जाती है उस मेहमान के आगे।।

प्रभु की कृपा को पाना हो तो।
सदा प्रसन्न रहना सीखों।।

मन का दीया तो जला ले

ज़िन्दगी का सफर करने वाले।
अपने मन का दीया तो जला ले।।

वक्त की धार यह कह रही है।
कष्ट क्यों आत्मा सही रही है।।
देख ऐसी जगह तू खड़ा है।
ज्ञान गंगा जहां बह रही है।।
बढ़ के गंगा में डुबकी लगा ले।

रात लम्बी है गहरा अंधेरा।
कौन जाने कहां हो बसेरा।।
तू है अनजान मंजिल का राही।
चलते रहना ही है काम तेरा।।
रोशनी से डगर जगमगा ले।

सूनी सूनी ये मंजिल की राहें।
चूमना तेरे कदमों को चाहें।।
गहन वन मं कहीं खो न जाना।
भटक जाएं न तेरी निगाहें।।
हर कदम सोच कर तू उठा ले।

बस तुझे है अकेले ही चलना।
बहुत मुमकिन है गिरना फिसलना।।
गिर के गिरना नहीं बात कुछ भी।
है बड़ी बात गिर के सम्भलना।।
यह ''पथिक'' बात दिल में बसा ले।

मानव तू अगर चाहे

तर्ज : ए मेरे दिले नादाँ

मानव तू अगर चाहे दुनिया को झुका देना।
बस ईश्वर के आगे सर अपना झुका देना।।

राजी हो प्रभु जिसमें वह काम सही होगा।
भगवान जो चाहेगा दुनिया में वही होगा।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना।।

रक्षक है अनाथों का दुखियों का सहारा है।
भव पार किया उसने जिसने ही पुकारा है।
उसे अपना बना करके उलझन सुलझा लेना।।

धरती और सागर के रत्नों को जो पाना हो।
आकाश में उड़ना हो, पाताल में जाना हो।
डोरी परमेश्वर को, पहले पकड़ा देना।।

चाहेंगी सदा तुझको खुशियां और आशाएं।
चूमेंगी चरण मेरे सब और सफलताएं।
जीवन को पथिक उसकी राहों पे लगा देना।।

भार झोंक कर 'भार' में, रहिमन उतरे पार।
वे डूबे मंझधार में, जिनके सिर पर भार।।

हे नाथ दयालु हो

हे नाथ दयालु हो, बस इतनी दया कर दो।
आया मैं शरण तेरी, भक्ति के भाव कर दो।।

तेरे रंग में रंग जाये, ये चंचल मन मेरा।
रहे साफ न हो धुंधला, मन का दर्पण मेरा।
हर शय से तुझे देखुं मेरे देव यही वर दो।।

मरता हूँ जीता हूं जी कर फिर मरता हूँ।
नौ मास गर्भ की जेल जाने से मैं डरता हूं।
बन्धन से छूट जाऊँ कुछ और नजर कर दो।।

हो जाऊँ अलग जग के दुख और संतापो से।
भगवन ले बचा मुझको दुर्गण और पापों से।
गाऊँ मैं गीत हरदम तेरे ही मधुर स्वर दो।।

जिस दर पे सर न झुके उसे दर नहीं कहते।
दर दर पे जो सर झुके उसे सर नहीं कहते।।

जगत में चिन्ता

तर्ज : तुम्हीं हो माता पिता तुम्ही हो

जगत् में चिन्ता मिटी उन्हीं की।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।
वो ही हमेशा हरे भरे हैं।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

न पाया राजा वजीर बनकर।
न पाया तुझ को फकीर बनकर।।
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे।
जो तेरे चरणों मं आ चुके हैं।।

न पाया तुझ को किसी ने बल से।
न पाया तुझ को किसी ने छल से।।
वहीं परमपद को पा गये हैं।
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

किसी ने जग में करी भलाई।
किसी ने जग में करी बुराई।।
वही सुमार्ग पर चल पड़े हैं।
तो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

प्रभु जी विनती सुनो हमारी।
बनाओ बिगड़ी दशा हमारी।।
निराश्रितों के हो आसरा तुम।
तुम्हारे चरणों में आ चुके हैं।।

तेरी मेहरबानी

तर्ज : ये माना मेरी जॉ

तेरी मेहरबानी का बोझ इतना।
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूं।।
मैं आ तो गया हूं मगर जानता हूं।
मैं सिर को झुकाने के काबिल नहीं हूं।।

ये माना कि दाता हो तुम कुल जहां के।
मगर कैसे झोली फैलाऊं मैं आके।।
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है।
मैं ज्यादा उठाने के काबिल नहीं हूं।।

तुम्हीं ने अता की, मुझे जिन्दगानी।
तेरी महिमा फिर भी मैंने न जानी।।
कर्ज़दार तेरी दया का हूं इतना।
जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूं।।

ज़माने की चाहत में खुद को मिटाया।
तेरा नाम हरगिज जुबां पे न आया।।
गुनहगार हूं मैं, सजावार हूं मैं।
तुम्हें मुंह दिखाने के काबिल नहीं हूं।।

यही मांगता हूं सिर को झुका लूं।
तेरा दीद इक बार जी भर के पा लूं।।
सिवा दिल के टुकड़े के–ए–मेरे मालिक।
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूं।।

एक तेरी दया का दान मिले

एक तेरी दया का दान मिले, एक तेरा सहारा मिल जाये।
भवसागर में बहती मेरी, नैया को किनारा मिल जाये।।

जीवन की टेढ़ी राहों में, चलकर न तुझ को जान सका।
आशाओं की झोली भर जाये, इक तेरा द्वारा मिल जाए।।

मैं दीन हूं दीनदयाल है तू, अल्पज्ञ हूं मैं सर्वज्ञ है तू।
अज्ञान का पर्दा हट जाये, तेरा उजियारा मिल जाये।।

इस दुर्लभ अवसर को पाकर, कोई उत्तम कर्म कमा न सका।
अब दिल की तड़प ये कहती है, यही प्रीतम प्यारा मिल जाये।।

अपने मुझको अपना न सके, औरों को उलाहना क्यों कर दूं।
तू सर्वकरों का दाता है, वरदान तुम्हारा मिल जाये।।

मैं नर हूं तू, नारायण है, इतना तो भेद ज़रूरी है।
यदि शरण तेरी मैं पा न सका, नर तन तो दुबारा मिल जाये।।

इसकी परवाह मत करो चाहे ज़माना खिलाफ है।
रास्ता वही चले चलो जो सीधा और साफ है।

जलाएं दीप कुछ ऐसे

तर्ज : नहीं ये हो नहीं सकता–बरसात

जलाएं दीप कुछ ऐसे अंधेरा मन का मिट जाए।
सभी दिन होवे मंगलमय, उजाला फिर से छा जाए।
सुख शांति होवे घर घर, खुशियां नई आए।
सभी खुशियां नई आए, सभी खुशियां नई आए।

जियें खुद सब को जीन दे, कुछ ऐसे काम कर पाएं।
करे दुख दूर दुखियों के सेवा निष्काम कर जाएं।
हंसते हंसाते मिलकर चले, हम मिल कर चले।
सुपावन प्रेम की गंगा, लहर आनन्द की लाएं।
नया वर्ष होवे मंगलमय, उजाला फिर से छा जाए।

प्रभु से प्रेम की ज्योति, जो इस दिल में जगाएगा।
वो मोह माया अंधेरे से, कभी ठोकर न खाएगा।
प्रभु बिन कोई न सहाई तेरा न सहाई तेरा।
नई सुबह की बेला में, क्या एक रंग आ जाए।
नया वर्ष होवे मंगलमय, उजाला फिर से छा जाए।

रचना–कंचन कुमार

दीवाना दीपक से इलैदहा उस दीपक की लौ समझे।
जो उस प्रभु का हो दीवाना फिर क्यों किसी को दो समझे।।

तेरी रहमतों का

तेरी रहमतों का सहारा न होता।
तो दुनिया में मेरा गुज़ारा न होता।।

तेरी रहमतों पर जिन्दा हूं मालिक।
तेरी बन्दगी में बन्दा हूं मालिक।
वर्ना जहां को गंवारा न होता।।

ये संसार सागर है भ्रम जाल घेरा।
छटा घोर पापों का छाया अंधेरा।
तेरे नूर का गर सितारा न होता।।

ये जीवन की नैया तेरे हवाले।
तू चाहे डूबो दे या चाहे बचाले।।
पतित आश्रितों को उभारा न होता।
तो मैंने तुझे फिर पुकारा न होता।।

शरीर के लिए काम ढूंढ लो
मन को अपने आप खुशी मिल जाएगी।

हर कदम पर नित नये सांचे में ढल जाते हैं लोग।
देखते ही देखते कितने बदल जाते हैं लोग।।
किस लिए कीजे किसी नई ज़न्नत की तलाश।
जबकि मिट्टी के खिलौनों से बहल जाते हैं लोग।।

ईश्वर जो करता है

ईश्वर जो करता हे अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।

जब से दुनियां बनी है तब से रोज बदलती है।
जो शय आज यहां है कल वो आगे चलती है।
देख के अदला बदली तू आहें क्यों भरता है।।

दुख सुख आते जाते रहते सब के जीवन में।
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में।
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है।।

कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आएगा।
जल में कमल खिलेगा फिर से वो मुस्काएगा।
देता है जो कष्ट वही कष्टों को हरता है।।

वो ही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाए।
सहे ''पथिक'' जो कांटे वो ही मंजिल अपनी पाए।
भट्टी में पड़ कर सोने का रंग निखरता है।।

जिस तरह लड्डू या मीठा खाने के बाद सारे पकवान फीके लगते हैं उसी तरह भक्ति का रस पीने के बाद सारे रस फीके लगते हैं।

जे भवसागर तर जाणा ई

तर्ज : मेरे यार दा डोला चलया

सारे रल मिल यश गुन गाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।
प्रभु भगती च मन नू लगाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।

तुसी आओ इदे द्वार, ये है सच्ची सरकार
दे वे कष्ट निवार।।
आज तुसी वी कर्म कमाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।

जेड़ा श्रद्धा ले के आवे, प्रभु नू विनती सुनावे
दर तो भर भर झोली पावे।।
आज तुसी वी झोली फैलाओ वे।
जे भवसागर तर जाणा ई।।

वो है दुनिया दा वाली, करे आप रखवाली
तू वी बन जा सवाली।।
तुसी ओदा ध्यान लगाओ वे।
जे भवसागर तर जाना ई।।

–रचना कंचन कुमार

एक पल के रूकने से दूर हो गई मंजिल।
सिर्फ हम नहीं चलते रस्ते भी चलते हैं।।

काया को नित साजे

काया को नित साजे मूरख,
प्रभु नाम से भागे।

तेल मले नित मल मल नहाए।
हाड़ मांस को खूब सजाए।।
मन मैला तन उजला तेरा।।
कैसे प्रभु पग लागे।।

आयु घटती पल पल तेरी।
चार दिनों की हेरा फेरी।।
पड़ा स्वप्न में जीवन खोए।
सांझ पड़े तब जागे।।

बालपनो सब खेल गवायो।
यौवन विषयों में भर मायो।।
वृद्व भयो तब फिरे ढूंढता।
कहां मनके कहां धागे।।

मूरख अपना आप बना ले।
खुद को खो ले खुद को पाले।।
ओउम् नाम की नदियां गहरी।
जो डूबे सो आगे।।

जो सीखो किसी से सिखाते चलो।
दीए से दीए को जलाते चलो।।

मुझे रास आ गया है

मुझे रास आ गया हे तेरे दर पे सर झुकाना।
तुम्हें मिल गया पुजारी, मुझे मिल गया ठिकाना।।

तेरी बन्दगी से पहले, मुझे जानता न कोई।
लब पर अगर न होता , तेरे नाम का तराना।।

मुझे कोई ग़म नहीं है, बदले अगर ज़माना।
मेरी ज़िन्दगी के मालिक, कहीं तुम बदल न जाना।।

बेघर बेदर हूं मैं, तेरे दर पे आ गया हूं।
तेरा दर ही बन चुका है, अब मेरा आशियाना।।

बस आरजू यही है, दम निकले तेरे दर पे।
दर तेरे आ गया हूं, दर दर अब रूलाना।।

दुष्ट को चाहे कितना ही सिखाओं पढ़ाओं, उसे सज्जन नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि नीम के पेड़ को चाहे जड़ से चोटी तक दूध और घी से सींच दो, तब भी उसमें मिठास नहीं आ सकती। अर्थात नीम न होय मीठो, चाहे सीचों गुड़ घी से।

कैसी ये दुनिया

कैसी ये दुनिया बनाई दाता।
ओ मेरे भगवान मेरे विधाता।।

तूने जगत में जीव बनाया।
चक्र चौरासी का फेर चलाया।।
चांद और तारे तू ने बनाए।
और कही पूरवाई दाता।।

रात बनाई तूने दिवस बनाया।
कई रंगो में इसको सजाया।।
कहीं है समन्दर कहीं सहरा है।
और कहीं धरती बनाई दाता।।

महिमा का तेरी कोई पार नहीं पाता।
कोई आता है और कोई जाता।।
ऋषि मुनियों ने जोर लगाया।
हाथ किसी के न आई दाता।।

रचना : कंचन कुमार।

**कोई समझेगा क्या राज़े गुलशन।
जब तक उलझे न कांटों से दामन।।**

**इबादत करते हैं जो लोग जन्नत की तमन्ना में।
इबादत नहीं है वो तो सिर्फ तिज़ारत है।।**

जीवन है ये क्या जीवन

तर्ज : एक प्यार का नग्मा है

जीवन है ये क्या जीवन, जिसमें न रवानी है।
ज़िन्दगी और कुछ भी नहीं, दो दिन की कहानी है।।

करे प्यार जो हर दिल सें, डूबो को किनारा दे।
गिरतों को उठा उपर, बांहों का सहारा दे।
उपकार के जीवन की, यही श्रेष्ठ कहानी है।।

कांटा जो किसी को लगे, चलता पग रूक जाए।
सी सीने से निकले तेरी, और उसके तू काम आए।
इंसा ही नहीं वो जिसकी आंखों में न पानी है।।

यश कुछ भी कमा न सका, प्रभु के भी न गुण गाए।
ये जीना भी क्या जीना, जो किसी के न काम आए।
जीते जी जीने की, कुछ सार न जानी है।।

खुद खाया तो क्या खाया, औरो को खिला न सका।
दो घूंट पानी की, प्यासे को पिला न सका।
पथिक तेरी इस जग को, फिर याद क्यों आनी है।।

कभी इंसान तूफानों से घबराया नहीं करते ।
वो बन्दे क्या मुसीबत में मुस्काया नहीं करते।।
जो सुख दुख सर्दी गर्मी हंस हंस के सहते है।
बिना पानी के भी वो कमल कुम्हलाया नहीं करते।।

पागल सब संसार

पागल सब संसार देखा, पागल सब संसार।
ये जग दीवानों की बस्ती, देख सोच विचार।।

कोई देखा धन का पागल, पूजा करता धन की।
धन कारण सुख चैन गवाए् मिटी न इच्छा मन की।
अन्त समय धन संग न जाए जोड़ जोड़ गया हार।।

कोई देखा रूप का पागल, यौवन का दीवाना।
पल पल बीती जाए जवानी, जीवन है ढल जाना।
जिस यौवन का मान करे तू, वो यौवन दिन चार।।

कोई देखा ज्ञान का पागल, पढ़ पढ़ नैन गवाए।
प्रेम बिना कभी ज्ञान न उपजे, बिरथा जनम गवांए।
सच्चा ज्ञान उसी ने पाया, करता जो उपकार।।

इन पागल दिमागों में भरे खुशियों के लच्छे हैं।
हमे पागल ही रहने दो हम पागल ही अच्छे हैं।।

खुदा को भुल गए लोग फिक्रे रोज़ी में।
रोटी तो याद रही देने वाले का ख़याल नही।।

वो ही पालन हारा

तर्ज : दीदी तेरा देवर दीवाना

वो ही जग का है पालन हारा।
प्रभु नाम तो सबका है सहारा।।
होगा जब उसका इशारा।
एक दिन मिल जाएगा किनारा।।

वो संग है तेरे तू है आंखे फेरे।
भटकता फिरे है तू सांझ सवेरे।।
उसको जिसने दिल से पुकारा।
एक दिन मिल जाएगा किनारा।।

क्या तिनका क्या पर्वत है सब उसकी माया।
वो कण कण बसा जग उसमें समाया।।
जो प्राणी तेरा नाम अधारा।
एक दिन मिल जाएगा किनारा।।

रचना : कंचन कुमार

अच्छी स्त्री से विवाह, जीवन के तूफान में बन्दरगाह की तरह है, बुरी स्त्री से, बन्दरगाह में तूफान की तरह।

नारी प्रकृति की बेटी है, उस पर क्रोध न करो। उसका ह्दय कोमल होता है, उस पर विश्वास करो।

कारीगर वो कारीगर

तर्ज : बाजीगर ओ बाजीगर

कारीगर वो कारीगर, वो है बड़ा कारीगर।
उसकी दुनिया निराली, वो ही सबका है माली।
कण कण में बसा वो ईश्वर।।

पर्वत की चोटी कहीं पे, चूमती है आसमां को।
कही पे रेशमी घटाए, बांधे है इस गुलिस्ता को।।
कही है चांद सितारे, कहीं पे सागर बनाया।
बारीश कहीं कहीं सूखा, कहीं पे धूप कहीं छाया।।
कण कण में समाएं, पर नज़र न आए,
वो ही सबसे बड़ा जादूगर।।

बीते पलो की ये टोली, लोगो जी कुछ गा रही है।
रुकती समय की नहीं गाड़ी, धीरे धीरे जा रही है।।
कल आज और कल का उसने, कैसा ये चक्कर चलाया।
सभी खिलौने सबकी चाबी, वो ही जाने उसकी माया।।
वो सबको नाच नचाए, पर नजर न आए,
वो ही सबसे बड़ा बाजीगर।।

रचना–कंचन कुमार

प्रत्येक व्यक्ति के अभिप्राय को सुनो परन्तु सुनकर एकदम बहक मत जाओ। उस पर विचार करो, जिससे आत्मा सहमत हो वही करो। बातें सुनने में जितनी कर्णप्रिय होती है, उनके अन्दर रहस्य नहीं होता। रहस्य वस्तु की प्राप्ति में है, दर्शन में नहीं। मिश्री का स्वाद चखने से आता है। देखने से नही।

ओ३म् की छाया तले

तर्ज : हे नीले गगन के तले

ओउम् की छाया तले, जीवन की जोत जले।
महिमा से उसकी सुबह आए महिमा से शाम ढले।।

ओउम् का नाम लेके, ओउम् का ध्यान करके।
जीवन ये सरस चले।।

न कोई अपना, न है पराया।
सबको लगाले गले।।

न कोई ऊँचा, न कोई नीचा।
सब में ही ब्रह्म रमे।।

ह्दय में प्रेम डोले, मुख से मधुर बोले।
सत्य वचन तू कहे।।

इस जीवन का, क्या है भरोसा।
पल में पंछी उड़े।।

न कोई बंधु, न कोई बांधव।
स्वार्थ में सब हैं खड़े।।

सच्चे मित्र हीरों की तरह कीमती और दुर्लभ हैं, झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियों की तरह हर जगह मिलते हैं।
—अरस्तु

हम सब मिलके दाता

हम सब मिलके आये दाता तेरे दरबार।
भर दे झोली सब की तेरे पूर्ण भण्डार।।

होवे जब प्रातः काल निर्मल होके तत्काल।
अपना मस्तक झुका के, करके तेरा ख्याल।
तेरे दर पर आके बैठे सारा परिवार।।

लेके दिल में फरियाद करते हम तुम को याद।
जब हो मुश्किल की घड़ियां तुम से मांगे इमदाद।
सब से बढ़के ऊँचा जग में तेरा दरबार।।

चाहे दिन हो विपरीत, होवे तुझ से ही प्रीत।
सच्ची श्रद्धा से गावें, तेरी भक्ति के गीत।
होवे सब का प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार।।

तू है हम सब का वाली करता सब की रखवाली।
हम हैं रंग रंग के पौधे, तुम्हीं हम सब के माली।
पथिक बगीचा है यह तेरा सुंदर संसार।।

संसार में रहो किन्तु संसार के माया मोह से निर्लिप्त रहो। जिस प्रकार कमल कीच में विकसित होता है, तथापि उसके दल कीच के स्पर्श से परे निर्मल ही रहते हैं।
—विवेकानन्द

भक्ति कर भगवन की

तर्ज : संसार है एक नदिया

भक्ति कर भगवन की, तेरे काम जो आएगी।
जो बीत गई घड़ियां, तेरे हाथ न आएगी।।

मन झूठी माया का अभिमान क्यों करता है।
ये साथ नहीं जाए ये ध्यान क्यों धरता है।
काया भी नहीं तेरी ये छोड़ के जाएगी।।

इस दुनिया में तेरा कुछ दिन का बसेरा है।
अब प्रभु को मना पगले बस एक वो तेरा है।
ये दुनिया रूलाती है वो हंसती हंसाएगी।।

संसार में आकर के तेरा नाम जो लेवेगा।
इंसान वो हरदम ही खुशियों में खेलेगा।
अब भक्ति कर उसकी खुशियां घर आएगी।।

सृष्टि की रचना में प्रभुवर ही समाए हैं।
रचना करके जग की क्या खेल खिलाए है।
जगदीश की जो माया ये वाणी सुनाएगी।।

जो ऐसी चीज खरीदता है, जिसकी उसे जरूरत नहीं है, उसे एक दिन ऐसी चीज बेचनी पड़ती है जिसकी उसे सख्त जरूरत होती है।

कैसी प्रभु तूने कायनात बांधी

तर्ज : आधा है चन्द्रमा रात आधी

कैसी प्रभु तूने कायनात बांधी।
एक दिन के पीछे एक रात बांधी, साथ साथ बांधी।।

कभी थकते नहीं है ये घोड़े।
तूने सूरज के रथ में जो जोड़े।।
रजनी ब्याहने चला चांद दुल्हा बना।
साथ चन्द्रमा के तारों की बारात बांधी।।

कैसी खुबी से बांधे ये मौसम।
वर्षा सर्दी हेमन्त और ग्रीष्म।।
ये बहार का समां और ये पतझड़ खिजा।
हवा बादलों के बीच बरसात बांधी।।

पक्षी जलचर व जन्तु चौपाये।
तूने सबके हैं जोड़े बनाये।।
नाग और नागनी राग और रागनी।
साथ स्त्री के पुरुषों की जात बांधी।।

नत्था सिंह हैं अनन्त तेरी माया।
जग के कण कण में तू है समाया।।
जग से बाहर नहीं फिर भी जाहिर नहीं।
अपने दामन में ऐसी करामात बांधी।।

तू ने खूब रचा

तू ने खूब रचा भगवान खिलौना माटी का।
माटी का रे माटी का, माटी का रे माटी का।।

कान दिए हरि भजन सुनन को।.. 4 बार
तू मुख से कर गुणगान। खिलौना ...

जिवहा दी हरि भजन करन को।... 4 बार
दी आंखे कर पहचान।

शीश दिया प्रभु शरण झुकन को
और हाथ दिए कर दान।....

ओ3म नाम का बना के बेडा।
और उतरो भव से पार खिलौना।...

हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य तब आता है, जब पराये अपने हो जाते हैं और सबसे बड़ा दुर्भाग्य या संकट तब आता है, जब अपने पराये हो जाते हैं।

– रविन्द्रनाथ ठाकुर

कुन्दन बना दो

प्रभु मेरे जीवन को कुन्दन बना दो।
कोई खोट इस में रहने न पाये।।

करो मेरे जीवन में ऐसा उजाला।
हर श्वास हो तेरे चिन्तन की माला।
मेरे दिल की दुनिया को इतना बदल दे दो।
कि दुनिया तेरी मुझे गले से लगाये।।

घटाओं की रिमझिम पवन के तराने।
लताओं का नाच और वृक्षों कें गाने।।
नज़र जिस तरफ जाये भगवान मेरी।
अमर ज्योति तेरी उधर मुस्कराये।।

जगत को मैं अपना परिवार समझूं।
परिवार को तेरा उपकार समझूं।।
कुसंग, लोभ अभिमान, द्वेष और आलस्य।
कोई इन में मुझ को सताने न पाये।।

'काम' के समान कोई रोग नहीं है, मोह के समान कोई शत्रु नहीं है। कोप के समान कोई आग नहीं है तथा आत्मज्ञान से बड़ा कोई सुख नहीं है।

मुझे ऐसा बना दो

तर्ज : छू लेने दो

मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता,
जीवन में लगे ठोकर न कहीं।
जाने अनजाने भी मुझ से,
नुकसान किसी का हो न कहीं।।

उपकार सदा करता जाऊं,
दुनिया अपकार भले ही करे।
बदनामी न हो जग में मेरी
कोई नाम भले ही दे न कहीं।।

जो तेरा बनकर रहता है,
कांटों में फूल सा खिलता है।
कितने ही कांटे पांव चुभें,
पर फूल भी हों कांटे न कहीं।।

तू ही बस मेरा ऐसा है,
दुख में भी साथ नहीं तजता।
दुनिया मुझे प्यार करे न करे,
खोऊँ तेरा भी न प्यार कहीं।।

मन हो मधु पूर्ण कलश मेरा,
आंखों से ज्योति छलकती हो।
तुम से मधु ऐसा पीने को,
जागता ही रहूं सोऊँ न कहीं।।

मैं क्या हूं, राह मेरी क्या है,
जीवन ये कंटीली राहें है।
इस राह पे चलते चलते कभी,
मेरे पांव थकें न, रूके न कहीं।।

मेरे दाता के दरबार में

मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता।
जो कोई जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाता।।

क्या साधु, क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी।
अन्तर्यामी अंदर बैठा, सब का हिसाब लगाता।।

बड़े बड़े कानून प्रभु के, बड़ी बड़ी मर्यादा।
किसी को कौड़ी कम नहीं देता, मिले न पाई ज्यादा।
इसीलिए वह दुनिया का जगत्पति कहलाता।।

चले न उस के आगे रिश्वत, चले नहीं चालाकी।
उस की लेन देन की बंदे, रीति बड़ी है बांकी।
समझदार तो चुप है रहता, मूरख शोर मचाता।।

उजली करनी कर ले बन्दे, कर्म न करयो काला।
लाख आंख से देख रहा है, वो तुझे देखने वाला।
उसकी तेज नजर से बंदे, कोई नहीं बच पाता।।

पुत्र वही है, जो पिता का भक्त है। पिता वही है, जो पोषक है। मित्र वही है जो विश्वासपात्र हो। पत्नी वही है, जो हृदय को आनन्दित करे।

पालने से लेकर कब्र तक ज्ञान प्राप्त करते रहो।

ओ3म् करूणा निधान है

जरा आ शरण में तू ओ3म् की, मेरा ओ3म् करूणा निधान है।
कण कण में है रमा हुआ, पत्ते पत्ते में विद्यमान है।।

ऋषि मुनि पा इसको तर गये योगी भी झोलियां भर गये।
अन्त नेति नेति हैं कर गए, ये नाम इतना महान है।।

इस नाम से तू लगा लगन, दिन रात इसमें तू हो मगन।
तुझे शक्ति इक मिल जाएगी, ये नाम मुक्ति का धाम है।।

ये नाम इतना महान् है, इस में भरा विज्ञान है।
हर लहर करती गान है, मेरे ओउम् का ही नाम है।।

इस नाम में इतना असर, दुख दर्द पीड़ा का न डर।
इच्छा पूर्ण हो तेरी प्रभु, मेरे देवता का प्रणाम है।।

थोड़ा नाम जपना जरूर चाई दा।
दुख ओ नू दसना जरूर चाई दा।
हनेरिया तुफानां होवे खुशियां मसाणां होवे।
ध्यान ओ दा रखना जरूर चाई दा।

दुनिया जिसे कहते है जादू का खिलौना है।
मिल जाए तो मिट्टी है खो जाए तो सोना है।।

याद कर ले घड़ी दो घड़ी

तर्ज : ज़िन्दगी की न टूटे लड़ी

उस प्रभु की कृपा बड़ी,
याद कर ले घड़ी दो घड़ी।
घण्टी बच जाये कब कूच की,
मौत हरदम सिरहाने खड़ी।। याद.....

किन्हीं शुभ कर्मों का फल है ये,
तुझे मानव का चोला मिला।
जो आया है जायेगा वो,
बन्द होगा न ये सिलसिला।
वेद की कहती एक एक कड़ी।। याद.....

इस जवानी पे इतरा न तू,
बातों बातों में मुक जायेगी,
उभरा सीना सिकुड़ जायेगा,
और कमर तेरी झुक जायेगी।
टेक करके चलेगा छड़ी।। याद.....

जो करना है ले आज कर,
कुछ खबर प्यारे कल की नहीं,
मानव चोले को कर ले सफल,
ढील दे इसमें पल की नहीं।
टूट श्वासों की जाये लड़ी।। याद.....

प्रभु जी तेरी लीला

प्रभु जी तेरी लीला है अपरम्पार।
सबके मालिक सबके दाता, ओ जग के करतार।।

ओ अविनाशी, घट घट वासी, भेद न तेरा पाया।
सबकी नजरों में रह कर भी, नजर किसी को न आया।
पर जो तेरा हो जाए, हर रंग में तुझको पाए।
करे तेरा सदा दीदार।। प्रभु जी तेरी लीला....

ओ सत के बन्दे तेरी, हर एक बार निराली।
हम तो छुट्टियां करते है पर, तू न बैठे खाली।।
दिन रात और सांझ सवेरे, खुले रहते है दफतर तेरे।
हर रोज़ नियम अनुसार।। प्रभु जी तेरी लीला....

दिन में दुनिया काम करे, और रात को करे आराम।
रात न होती तो हो जाती, बोलो सबकी राम।।
क्या खूब नियम है तेरा, जाए रात और आए सवेरा।
हर रोज़ नियम अनुसार।। प्रभु जी तेरी लीला....

बिन मांगे दे मुफ्त सभी को, हवा रोशनी पानी।
दान करे और जतलाए न, गजब का वो है दानी।।
तू सबको ही देता दाता, तेरा दिया हुआ हर कोई खाता।
हे तेरे भरे भंडार।। प्रभु जी तेरी लीला....

मुस्कराना सीख ले

अपने दुःख में रोने वाले मुस्कराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में आंसू बहाना सीख ले।।

जो खिलाने में मजा है, आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के काम अपना सीख ले।।

कर गरीबों का भला बेनसीबों पर रहम।
सेवा में भगवान है तू दर्श पाना सीख ले।।

एक छोटा सा दीया है गम न कर इस बात का।
इन अंधेरों में किसी को राह दिखाना सीख ले।

कर्म तेरा हो भलाई धर्म तेरा प्रेम हो।
बेसहारों का सहारा बन उठाना सीख ले।।

वीर कर वो काम जिससे तू सदा जिन्दा रहे।
हर किसी को प्यार से अपना बनाना सीख ले।।

इतना आसां नहीं आबाद करना घर मोहब्बत का।
ये उसी का काम है जो खुद बरबाद होते हैं।।

फुरसत के वक्त भी न सिमरन का वक्त निकला।
उस वक्त, वक्त मांगा जब वक्त तंग आया।।

भगवान के दर पर

भगवान के दर पर आते ही। सन्तोष हमं मिल जाता है।
जीवन कली मुस्काती है। मन का गुन्चा खिल जाता है।।

सूरज में तेरा जलवा है तारों में तेरी मूरत है।
हर बस्ती तेरी बस्ती है हर दिल में तेरी सूरत है।
वेदों ने हमें बतलाया, मन मन्दिर में मिल जाता है।।

हर शय को तेरा सहारा है गर्दिश को तेरा इशारा है।
कण कण में तेरी खुशबू है हर शै में तेरा नजारा है।
कभी फूल चमन में खिलता है, कभी मिटटी में मिल जाता है।।

मालिक हम तेरे बन्दे हैं तेरे दरबार में आए है।
मंजूर करो तो अर्ज करें, जो भी अभिलाषा लाए है।
जिस लाल के सिर तेरा हाथ रहे,, सुख चैन उसे मिल जाता है।।

हम राजी हैं उसी में, जिसमें तेरी रजा है।
इधर भी वाह वाह है, उधर भी वाह वाह है।।

ये सिखाया है दोस्ती ने हमें।
दोस्त बन कर कभी दगा न करो।।

चरणों में तेरे हे प्रभु

चरणों में तेरे हे प्रभु अर्पण है जिन्दगी मेरी।
तू ही मेरा माता पिता, तेरी शरण बन्दगी मेरी।।

जब से लिया है मेंने जनम, मुझको मिले है गम ही गम।
चिन्ता भरे जहान में, तू ही है जिन्दगी मेरी।।

किसको सुनाए हम यहां, मतलब का है ये सारा जहां।
स्वार्थ भरे जहान में, तू ही है जिन्दगी मेरी।।

तेरी दया से हे प्रभु लाखें की पापी तर गए।
तेरा सहारा मेरे प्रभु कहती है ज़िन्दगी मेरी।।

पागल मन मेरा है बड़ा सागर शरणर में आ पड़ा।
विनती करूं मैं हे प्रभु पापी है ज़िन्दगी मेरी।।

अन्न और जल के दान के समान कोई दान नहीं है।
द्वादशी के समान कोई तिथि नहीं है।
गायत्री से बढ़कर कोई मन्त्र नही है।
मां से बढ़कर कोई देवी देवता नही है।

बुरा काम करते समय मनुष्य हंसता है, आनन्द मनाता है किन्तु परिणाम भोगते समय रोना पड़ता है।
—महाभारत

तेरा ही आसरा है

तर्ज : मुझे इश्क है तुम्हीं से

सारे जहां के मालिक तेरा ही आसरा है।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।।

हम क्या बतायें तुझको, सब कुछ तुम्हें खबर है।
हर हाल में हमारी, तेरी तरफ नजर है।
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है।।

हाथों को हम दुआ की खातिर में लाये कैसे।
सज़दे में तेरे आकर, सिर को झुकायें कैसे।
मजबूरियां हमारी, सब तू ही जानता है।।

रो कर कटे या हंस कर, कटती है ज़िन्दगानी।
तू गम दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी।
तेरी खुशी समझकर, सब ग़म भुला दिया है।।

दुनिया बनाके मालिक, जाने कहां छिपा है।
आता नहीं नजर तू, बस एक यही गिला है।
भेजा है इस जहां में, जो तेरा शुक्रिया है।।

प्रभु अपने बन्दों की खुद करता निगहबानी।
नया मंजर नया बिस्तर नया दाना नया पानी।।

तेरे नाम का सुमिरन

तेरे नाम का सुमिरन करके, मेरे मन में सुख भर आया।
तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया।।

दुनिया की ठोकर खाकर जब हुआ कभी बेसहारा।
न पाकर अपना कोई तब मैंने तुम्हे पुकारा।
हे नाथ मेरे सिर ऊपर तूने अमृत बरसाया।।

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाए।
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाए।
जितनी भी बार गिरा हूं, तू ने पग पग मुझे उठाया।

भवसागर की लहरों में भटकायी मेरी जब नैया।
तट छूना भी मुश्किल था, नहीं दीखे कोई खिवैया।
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव कनारे लाया।।

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा।
निर्लेप प्रभु जी मेरे, हर रूप में रंग तुम्हारा।
तेरी शरण में दाता, मैने तेरा ही तुम को चढ़ाया।।

हंसिबो खेलिबो करिबो ध्यान–गोरख वाणी।
कोई भी कार्य करो तो खेल समझ कर पूरा करो।।

तुम साधुओं की जिन्दगी भक्तों की आस हो।
मैं उनका दास हूं जो प्रभु तेरा दास हो।।

जागो रे जिन जागना

जागो रे जिन जागना, अब जागन की बार।
फेर क्या आगे नानका, जब सोवे पांव पसार।।

गुण गोविन्द गायों नहीं, जनम अकारथ कीन्ह।
कहे नानक हरिभज मना, जेहि विधि जग को मीन।।

जो प्राणी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार।
कहे नानक ये विपद में, एक एक रघुनाथ।।

सुख में बहुसंगी भये, दुख में संग न कोय।
कहे नानक हरिभज मना, अन्त सहाई होय।।

संग सखा सब तज गए, कोई न निभयों साथ।
कहे नानक इस विपद में, एक एक रघुनाथ।।

झूठे कान काहे करे, जग सुपना ज्यों जान।
इनमें कछु तेरो नहीं नानक कहयों बखान।।

अपना ह्दय पवित्र रखोगे तो,
दस प्राणियों की शक्ति रखोगे।

जागते रहिए मगर क्या होगा।
वक्त पर अपने सवेरा होगा।।

दयालू दया कर

तर्ज : ये दिल और उनकी

दयालू दया कर, दया कर दया कर।
ये प्याला मेरा प्रेम अमृत से दे भर।।

मुझे सोते जागते रहे ध्यान तेरा।
विषय वासना में लगे मन न मेरा।।
तेरा जाप करता हूं सर को झुका कर।
ये प्याला मेरा प्रेम अमृत से दे भर।।

मेरे मन के मन्दिर में प्रकाश कर दो।
अविधा व अन्धकार का नाश कर दो।।
करूं प्रार्थना मैं सर को झुका कर।
ये प्याला मेरा प्रेम अमृत से दे भर।।

सरल शब्द मे ंतीन अक्षर है स, र, ल,
'स' से सीता 'र' से राम, 'ल' से लक्ष्मण। जिस
तरह प्रभु सरल है उसी तरह आप भी सरल बनो।

सीधे बनें। जंगल की टेढ़ी लकड़ियां जलाने के काम
ही आती हैं लेकिन सीधी लकड़ियों से निर्माण होता है।।

हे ज्ञानरूप भगवन

हे ज्ञानरूप भगवन हमको भी ज्ञान दे दो।
करूणा के चार छींटे करूणा निधान दे दो।।

अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सकें हम।
इन बाजुओं में शक्ति हे शक्तिमान दे दो।।

दाता तुम्हारे दर पर किस चीज की कमी है।
चाहो तो निर्धनों को दौलत की खान दे दो।।

डर है कहीं तुम्हारा आंचल न छूट न जाए।
भक्तों की मंडली में हमकों भी स्थान दे दो।।

सुनते है जग में तुम हो बिगड़ी बनाने वाले।
आए है तेरी शरणी हमको भी मान दे दो।।

**जल में तेल, दुष्ट से कही गई गुप्त बात,
योग्य व्यक्ति को दिया गया दान तथा बुद्धिमान को
दिया गया ज्ञान थोड़ा सा होने पर भी अपने आप
विस्तार प्राप्त कर लेते हैं।**

सोने की हिरनी न तो किसी ने बनायी, न किसी ने इसे देखा और न यह सुनने में ही आता है कि हिरनी सोने की भी होती है। फिर भी रघुनन्दन की तृष्णा देखिए। वास्तव में विनाश का समय आने पर बुद्धि विपरीत हो जाती है।

चैन न आए राम

भजन बिना चैन न आए राम।
कोई न जाने कब हो जाए।
इस जीवन की शाम।।

मोह माया की आस तो पगले होगी कभी न पूरी।
करते करते भजन प्रभु का मिट जाएगी दूरी।
हम भक्तों के साथ साथ लो सब ही प्रभु का नाम।।

भजन है अमृत रस का प्यारा शाम सवेरे पीना।
इसको पीकर सारा जीवन मस्ती मे तू जीना।
भक्ति कर तो बन जाएगें अपने बिगड़ो काम।।

छोटा सा तो जीवन है

छोटा सा तो जीवन है, करता चल तू दान रे।
करता चल तू दान रे।।

काम कभी तू आ दुनिया के, आंसू पोंछ किसी दुखिया के।
उठा गिरे को, बना मिटे को, अपना ही सा जान रे।
करता चल तू दान रे।।

मिटे किसी की यदि कंगाली, कर दे तू अपने को खाली।
तेरी झोली भरने वाला, है तेरा भगवान रे।
करता चल तू दान रे।।

मिले अगर जो शूल राह पर सदा बिछा तू फूल राह पर।
आज नहीं तो कल जाएगा, रंग तेरा बलिदान रे।
करता चल तू दान रे।।

दुनिया बनाने वाला

तर्ज : कजरा मोहब्बत वाला

दुनिया बनाने वाला, जग को चलाने वाला।
सब का है दाता भगवान माने न माने इंसान।।

आंखे न हाथ जिसके, न कोई आकार देखो,
न है औजार कोई, न कोई आधार देखो।
रचना है फिर भी कैसी, अदभुत संसार देखो,
पतझड़ दिखाने वाला, बादल बरसाने वाला।
कहीं कहीं जंगल बियावान।। माने न माने

चलती न रिश्वतखोरी, उसके दरबार कोई,
संगी न साथी उसका, न रिश्तेदार कोई।
संगी न साथी उसका, न रिश्तेदान कोई,
सज्जन हंसाने वाला, दुर्जन रूलाने वाला।
सबको है देता अंजाम।। माने न माने

निर्जन भयानक वन से, जो चाहो पार जाना,
भक्ति तप ज्ञान द्वारा, भवसागर पार जाना।
पथिक मंजिल से अपनी, हिम्मत न हार जाना,
मारग दर्शाने वाला, उलझन सुलझाने वाला।
करता है सबका कल्याण।। माने न माने

एक झोली में

इक झोली में फूल भरे हैं, इक झोली में कांटे रे।
कोई कारण होगा।
तेरे बस में कुछ भी नहीं, ये तो बांटने वाला जाने रे।
कोई कारण होगा।।

पहले बनती है तकदीरें, फिर बनते है शरीर।
ये प्रभु की कारीगरी है, तू है क्यों गंभीर।
कोई कारण होगा।।

नाग भी डस ले तो मिल जाये, किसी को जीवन दान।
चींटी से भी मिट सकता है, किसी का नाम निशान।
कोई कारण होगा।।

धन का बिस्तर मिल जाये पर, नींद को तरसे नैन।
कांटों पर सोकर भी आये, किसी के मन को चैन।
कोई कारण होगा।।

सागर से भी बुझ सकती नहीं, कभी किसी की प्यास।
कभी एक ही बूंद से, हो जीती है पूरण आस।
कोई कारण होगा।।

कोई चले नहीं बिन मोटर के, कोई नंगे पैरों भाग रहा।
कोई महलों की अभिलाष करे, कोई बनी हवेली त्याग रहा।
कहीं ढेर पड़े ज़र ज़ेवर के कहीं कर्ज किसी से कोई मांग रहा।
कोई ले सड़क पर खर्राटे, कोई गद्दों पर भी जाग रहा।

शरण में आये हैं

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

न हममें बल है न हममें शक्ति, न हममें साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम हो पालक तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

सुना है हमने कि हम तुम्हारे, तुम्ही हो सच्चे प्रभु हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी, दया करो है दयालु भगवन्।।

बुरे हैं जो हम तो है तुम्हारे, भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर के हम दुःखारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

प्रदान कर दो महान् शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे ताप–हारी, दया करो हे दयालु भगवन्।।

प्रार्थना परमात्मा के द्वार पर आपकी आत्मा की पुकार है। प्रार्थना उसके द्वार पर विवशताओं का क्रन्दन नहीं बल्कि वेदनाओं का विसर्जन है।

भजन सुनाता चल

तर्ज : गीत गाता चल

गीत गाता चल प्रभु के भजन सुनाता चल।
ओ बन्धु रे, प्रभु गुण गाते बीते हर घड़ी हर पल।।

वादा किया प्रभु से, नर तन पाया रे,
दुनिया में आके तूने वादा भुलाया रे।
अपनी ही धुन में रहा तू मगन,
मन से किया न कभी प्रभु का भजन।
ओ साथी रे, मन से हरि गुण गाले पल कुछ पल।।

सोच ले बन्दे तुझे, एक दिन जाना रे,
बड़ा ही कठिन फिर से नर तन पाना रे।
ओ कल कल करते बीतेगी ये उमर,
आने वाले कल की नहीं किसी को खबर।
ओ बन्धु रे, देखा किसी ने नहीं आने वाला कल।।

बन्धन और वन्दन में इतना ही फर्क है एक संसार से बांधता है एक संसार से मुक्त करता है।

दरिद्र, अपाहिज, रोगी, अनुदार और विपत्ति में पड़ं हुये जीवों को अपने से छोटा मत समझो, उनसे घृणा मत करो, बल्कि उनकी सेवा करो और उन्हें सुख पहुंचाओ। ईश्वर न करे तुम्हारे भी जीवन में वैसी अवस्था हो सकती है।

–भगवान महावीर

मेरे देवता

तर्ज : बहुत प्यार करते हैं

मेरे देवता मुझको देना सहारा।
कहीं छूट जाए न, दामन तुम्हारा।।

तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया।
इशारों से मुझको, बुलाती है दुनिया।
न समझूं मैं जग का झूठा इशारा।।

तेरे रास्ते से हटाए न कोई।
लगन का ये दीपक, बुझाए न कोई।
तुम्हीं मेरी नैया हो तुम्ही हो किनारा।।

सुबह शाम तुमको ध्याता रहूं मै।
तेरे प्रेम के गीत गाता रहूं मैं।
तेरा नाम है मुझको, प्राणों से प्यारा।।

मैंने यह हमेशा देखा है कि दुनिया में कामयाब होने के लिये आदमी को ऊपर से मूर्ख बने रहना चाहिये, पर वास्तव में बुद्धिमान होना चाहिए।

अगर तुम बहुत ऊँचा जाना चाहते हो
तो बहुत नीचे से चलना शुरू करो।
–साइरस

भला करो

भला करो भगवान सबका भला करो।

तुम हो सब जग के पालक
मात पिता तुम, हम हैं बालक।
मांगे ये वरदान।। सबका भला करो

सूरज–पृथ्वी, चांद सितारे, चमकें सारे न्यारे–न्यारे।
करें तेरा गुणगान।। सबका भला करो
गर्भ में कैसे गात बनाये, गात बनाकर जोत जगाये।
है बुद्धि हैरान।। सबका भला करो

इसी बीज से फूल उगाए, कांटे भी उस बीज में पाए।
कह न सके ज़बान।। सबका भला करो
शुद्ध विचार ह्दय में भर दो, बुरी भावना दूर ही कर दो।
हो सबका कल्याण।। सबका भला करो

आशानन्द जब अन्त समय हो,
रोम रोम से ओ३म् की लय हो।
ओ३म् कहें छूटें प्राण।। सबका भला करो

हम पात्र बनें प्रभु की कृपा अपने आप बरसती है।
समुद्र किसी के पास जल मांगने नही जाता।

रे मन मुसाफिर

तर्ज : बहुत प्यार करते हैं

रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।
काया कुटिर खाली करना पड़ेगा।।

भाड़े की कुटिया को तू क्या संभाले।
जब घर का मालिक ही तुझको निकाले।
इसका किराया भी भरना पड़ेगा।। काया कुटिर...

आयेगा नोटिस जमानत न होगी।
जो पल्ले तेरे कुछ अमानत न होगी।
हो कर के कैद तुझे जाना पड़ेगा। काया कुटिर...

यमराज की जब तुम अदालत चढ़ोगे।
पूछेगा हाकिम तो फिर क्या कहोगे।
पापों की अग्नि में जलना पड़ेगा। काया कुटिर...

मेरी न मानो यमराज तो मनायेंगे।
तेरे करम सारे तुझे भुगतायेंगे।
प्यारे नरक में दुःख सहना पड़ेगा। काया कुटिर...

कहे संकीर्तनानन्द फिरेगा तू रोता।
लख चौरासी में खायेगा गोता।
फिर जन्म और फिर मरना पड़ेगा। काया कुटिर...

वरदान जो मिल जाए

दाता तेरे सुनिरन का, वरदान जो मिल जाए।
मुरझाई कली दिल की, इक आन में खिल जाए।।

सुनते हैं तेरी रहमत, दिन–रात बरसती है।
एक बूंद जो मिल जाए, तकदीर बदल जाए।।

ये मन बड़ा चंचल है, चिंतन में नहीं लगता।
जितना इसे समझा लूं, उतना ही मचल जाए।।

हे नाथ! मेरे मन की, बस इतनी तमन्ना है।
पापों से बचा लेना, पांव न फिसल जाए।।

देवत्व के फूलों से, दामन को मेरे भर दो।
जीवन ये सुगन्धित हो, दुर्गन्ध निकल जाए।।

ऐ मानव तू दिल से, प्रभु का सिमरन कर ले।
दोषों भरे जीवन का कांटा ही बदल जाए।।

तुम्हारा दिल जितना हल्का होगा।
तुम्हारी प्रार्थना उतनी ऊँची होगी।।

एक बार भजन कर ले

एक बार भजन कर ले मुक्ति का यतन कर ले।
कट जायेंगे जन्म–मरण, प्रभु का चिन्तन कर ले।।

यह मानव का चोला हर बार नहीं मिलता,
जो गिर गया डाली से वो फूल नहीं खिलता।
मौका है ये जीवन का, गुलजार चमन कर ले।।

नर इन कानों से सुन तू ऋषियों की वाणी,
मन को ठहरा करके बन जा आत्मज्ञानी।
जिह्वा तो चले मुख में, अब ओउम् जपन कर ले।।

इस मैली चादर में, है दाग लगे कितने,
पर ज्ञान की साबुन में है झाग भरे इतने।
धुल जायेगी सब स्याही, उजला तन–मन कर ले।।

सुन वेदों में गूँज रही, मंत्रों की मधुर ध्वनियाँ,
बलिदान के इस युग में तू गूँथ ई कड़ियाँ।
अब तो प्रभु के आगे, नीची गर्दन कर ले।।

तू व्यापक डाली–डाली है

तू व्यापक डाली–डाली है, कोई जगह न तुझसे खाली है।

तेरी ही अद्भुत माया है, तूने ही जगत रचाया है।
सब पर ही तेरा साया है, जग बाग तेरा तू माली है। तू

सब वृक्ष और बेलें झूम रहीं, तेरे चरणों को है चूम रही।
तेरी प्रेम की वायु से झूम रही, तेरी महिमा अजब निलाली है। तू

सब पक्षी तुझे ही ध्याय रहें, तेरे ही सब गुण गाए रहे।
तेरे ध्यान में मन लगाय रहे, तू ही प्रभु सबका वाली है। तू

तू सब जग का दुःख हरता है, और सबका पालन करता है।
क्या राजा है क्या प्रजा है, तेरे दर पर सभी सवाली है। तू

सब मिलकर तेरे गुण गाते हैं, तेरे चरणों में शीश झुकाते हैं।
दो भक्ति दान यह चाहते हैं, तेरे दर पर अलख जगाली है। तू

देह धरे का दण्ड है, सब कोउ को होय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख भुगते रोय।।

मानव का चोला तो दिया, बिन भक्ति के बेकार है।।

प्रभु जी इतनी सी

प्रभु जी इतनी सी दया कर दो, हमको भी तुम्हारा प्यार मिले।
कुछ और भले ही मिले न मिले, तेरी भक्ति का अधिकार मिले।।

सब कुछ पाया इस जीवन में, बस एक तमन्ना बाकी है।
हर प्रेम पुजारी के मन में, तेरी भक्ति का अधिकार मिले।।

वो जीवन भी क्या जीवन है, जिस जीवन में जीवन ही नहीं।।
जीवन तब जीवन बनता है, जब जीवन का आधार मिले।।

जिसने तुमसे जो कुछ मांगा, उसने तुमसे वो ही पाया।।
दुनिया को मिले दुनिया लेकिन, भक्तों को तेरा वो प्यार मिले।।

हम जन्म–जन्म के प्यासे हैं, और तुम करुणा के सागर हो।
करुणा निधि से करुणा रस की एक बूँद हमें एक बार मिले।।

इस मार्ग पर चलते–चलते, सदियां ही नहीं युग बीत गये।।
मिल जाये पथिक मंजिल अपनी हमको जो तुम्हारा द्वार मिले।।

न करने योग्य काम नहीं करना चाहिये।
करने योग्य काम में आलस्य नहीं करना चाहिये।
जिससे नशा चढ़े वो पेय नहीं पीना चाहिये।
कार्य सिद्ध होने से पहले मंत्र प्रकट नहीं करना चाहिये।

ओउम् जपो मेरी बहना

ओउम् जपो मेरे भाई, ओउम् जपो मेरी बहना।
अन्त समय तक इस वाणी से, ओउम्–ओउम् ही कहना।।

ओउम् जपे से सारे कल्मष धुल जाते हैं।
ओउम् जपे से सारे बंधन खुल जाते हैं।
ओउम् ही तेरा मुकुटमणि है, ओउम् है सुन्दर गहना।।

ओउम् नाम का सिमरन सुख पहुंचाता है।
ओउम् नाम का चिन्तन मन हर्षाता है।
अमृत के सागर में प्रेमी, मस्त मगन हो बहना।।

कभी–कभी जीवन में सुख भी मिलता है।
सुख छिन जाता है तो दुःख भी मिलता है।
ईश्वर का वरदान समझ के, खुशी–खुशी सब सहना।।

जीवन अर्पण हो जाये।
बिन सोचे सर्वस्व समर्पण हो जाये।
जिस रंग में राखे दाता, उसी रंग में रहना।।

बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।
लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ, दिलों का जलाना मत सीखो।
मिटा सको तो अहं मिटाओ, प्रेम मिटाना मत सीखो।
बिछा सको तो फूल बिछाओ, शूल बिछाना मत सीखो।
बता सको तो सुपथ बताओ, पथ भटकाना मत सीखो।

प्रभु प्यारे से

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।

झूठी ममता से करके किनारा,
लेके सच्चे पिता का सहारा।
हुआ उसकी रजा में रजामन्द है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

जिस की कथनी में कोयल की चहक है,
जिसकी करनी में फूलों सी महक है।
प्रेम नरमी ही जिस की सुगन्ध है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

निंदा चुगली न जिसको सुहावे,
बुरी संगंत की रंगत न भावे।
सत्संगत ही जिसको पसन्द है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

दीन दुःखियों के दुःख जो मिटावे,
बनके सेवक भला सबका चाहे।
जिसके जीवन में पाखण्ड न घमण्ड है,
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।

नर–नारी सब

नर नारी सब प्रातः शाम,
भज लो प्यारे ओ3म् का नाम।

ओ3म् नाम का पकड़ सहारा,
जो है सच्चा पिता हमारा।
वह ही है मुक्ति का धाम।

कैसा सुन्दर जगत रचाया,
सूरज चन्द्र, आकाश बनाया।
गुण गाता है जगत तमाम।।

पृथ्वी और पहाड़ बनाए,
नदिया नाले खूब सजाए।
कर बिन कर्म करें निष्काम।।

ऋषियों मुनियों ने है ध्याया,
अन्त न किसी ने उसका पाया।
करते हैं उसको प्रणाम।।

मन अपने को शुद्ध बनाओ,
विषय विकारों से बच जाओ।
वेदों का यह ही प्रमाण।।

हीरा जनम गंवाओं न तुम,
नन्दलाल घबराओ न तुम।
संध्या करो सुबह और शाम।।

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल,
भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल–पल छिन–छिन,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे बैरी खुद संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बनें,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों और अंधेरा हो।
पर मन न डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे कांटों पर मुझे चलना हो,
चाहे अग्नि में भी जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

ओ३म् नाम के हीरे मोती

ओ३म् नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली गली।
ले लो रे कोई ओउम् का प्यारा, आवाज लगाऊँ गली–गली।

माया के दीवानों सुन लो, इक दिन ऐसा आयेगा।
धन दौलत और रूप खजाना, धरा यही रह जायेगा।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली–गली। ले लो

मित्र प्यारे सगे सम्बन्धी, इक दिन तुझे भुलायेंगे।
कल जो कहते थे अपना, अग्नि में तुझे जलायेंगे।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली–कली। ले लो

क्यों करता है मेरी मेरी, तज दे इस अभिमान को।
छोड़ जगत के झूठे धंधे, जप ले प्रभु के नाम को।
गया समय फिर हाथ न आये, तब पछताये घड़ी–घड़ी। ले लो

जिसको अपना कह कर के, मूरख तू इतराता है।
छोड़ दे बन्दे साथ विपद में, साथ नहीं कोई जाता है।
दो दिन का यह रैन बसेरा, आखिर होगी चलो चली। ले लो

चार कार्यो में कोई साथ नहीं देता।
ये कार्य स्वयं करने होते हैं
भोजन, भजन, लग्न एवं मृत्यु।

चंचल मन नित

चंचल मन नित ओ३म् जपाकर,
ओ३म् जपाकर ओ३म्।
पल–पल, छिन–छिन, घड़ी–घड़ी, निशिदिन,
ओ३म् जपाकर ओ३म्।।

प्रातः समय की शुभ वेला में,
संध्या की पुलकित रजनी में।
रोम–रोम से निकले तेरे,
ओ३म् जपाकर ओ३म्।।

गहरा सागर टूटी नैया,
जीवन तरनी ओ३म् खिवैया।
पार करेंगे ओ३मं्।।

सार तत्व की खोज किये जा
नाम सरस रस रोज पिये जा।
पार करेंगे ओ३म्।।

पावक की लपटों में पड़कर सोना कुंदन बन जाता है।
भाव शुद्ध हो नन्हा धागा रक्षाबन्धन बन जाता है।
संघर्षों की भट्टी में तप जाना छोटी बात नहीं,
त्याग तपस्या से मानव माथे का चंदन बन जाता है।।

सब में ओ३म् समाया

मुझमें ओ३म् तुझ में ओ३म्, सब में ओ३म् समाया।
सब से करलो प्रीत जगत में, कोई नहीं पराया।

जितने ये संसार में प्राणी, सब में एक ही ज्योति
एक बाग के फूल हैं सारे, इक माला के मोती।
एक ही कारीगर ने सबको एक माटी से बनाया।।

एक बाप के बेटे हैं हम, एक हमारी माता।
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता।
फिर ना जाने किस मूर्ख ने, लड़ना हमें सिखाया।।

छूतछात और भेदभाव की, दीवारों को तोड़े।
टूट गये हैं मन के मन्दिर, प्रेम से इनको जोड़े
बदला जमाना हम भी बदले, समय है ऐसा आया।।

इस तरह से मत कमाना कि पाप आ जाए,
इस तरह से मत खाना कि मर्ज आ जाए,
इस तरह से मत खर्च करना कि कर्ज आ जाए,
इतना धीरे भी मत चलना कि देर हो जाये।

जीवन की घड़ियां

जीवन की घड़ियों वृथा न खो,
ओ3म् जपो ओ3म् जपो।
चादर न लम्बी तान के सो,
ओ3म् जपो, ओ3म् जपो।।

ओ3म् ही जग का सार है,
जीवन है जीवन आधार है।
प्रीति न उसकी मन से तजो,
ओ3म् जपो ओ3म् जपो।।

चोला यही है कर्म का,
करने को सौदा धर्म का।
इसके बिना मार्ग न कोई,
ओ3म् जपो ओ3म् जपो।।

मन की गति सम्भालिये,
ईश्वर की ओर डालिये।
खोना न चाहे जीवन को जो,
ओ3म् जपो ओ3म् जपो।

मैं तो तेरे दीप का परवाना हूँ।
मैं तो तेरे तेज का दीवाना हूँ।
तू है भण्डार मधुर रागों का
मैं तो एक अर्थहीन गाना हूँ।

नमस्कार भगवान तुम्हें

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

कण–कण में तुम बसे हुए हो तुझमें जगत् समाया है।
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया है।।
तुम दुनिया के हर प्राणी के जीवन के आधार हो।। श्रद्धारूपी

सबके सच्चे पिता तुम्ही हो तुम्ही जगत् की माता हो।
भाई बन्धु सखा सहायक रक्षक पोषक दाता हो।।
चींटी से लेकर हाथी तक सब के सृजन हार हो।। श्रद्धारूपी

ऋषि–मुनि योगी जन सारे तुमसे ही वर पाते हैं।
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे दर पर शीश झुकाते हैं।।
परम कृपालु परम दयालु करूणा के आधार हो।। श्रद्धारूपी

जीवन के तूफानों में प्रभु तुम्हीं एक सहारा हो।
डगमग डगमग नैया डोले तुम्हीं नाथ किनारा हो।।
तुम खेवट हो इस नैया के और तुम्ही पतवार हो।। श्रद्धारूपी

आँधियों से अपने रिश्ते तो बहुत पुराने हैं।
फिर भी हर हाल में चराग़ तो जलाने हैं।।

तेरे करम से बेनियाज़

तेरी दया से हे प्रभु कौन सी शै मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहां कमी नहीं।।

जीने को जी रहा हूं मैं, मालिक तेरे बगैर भी।
ज़िन्दगी किसको कह सकूं ऐसी तो जिन्दगी नहीं।।

कब से पुकारता है दिल, सुनता मगर कोई नहीं।
मेरा तो इस जहान में, तेरे सिवा कोई नहीं।।

माना कि मैं गरीब हूं, माना कि मैं फकीर हूं।
मुझसे न ऐसे रूठिये, कि जैसे मेरा कोई नहीं।।

सज़दा करूं किसको बता, जब तू ही सामने नहीं।
कायले बन्दगी तो हूं, काबिले बन्दगी नहीं।।

ग़म पे ग़म उठाये जा, तीरों पे तीर खाये जा।
उफ न कर लबों को सी, आशिकी हैं, दिल्लगी नहीं।।

इसकी नज़र मिली तो क्या, उसकी नज़र फिरी तो क्या।
जिस बन्दगी में होश हो, वो बन्दगी बन्दगी नहीं।।

ओ३म् का सुमिरन

ओ३म् का सुमिरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

सुर दुर्लभ मानव तन तूने, बड़े भाग्य से पाया।
विषयों में फंसकर क्यों बन्दे, हीरा जन्म गंवाया।।
दुष्ट संग ना किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो,
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसकी का लिया करो।।

पता नहीं कब रूक जाये यह चलते–चलते स्वांसा।
इक क्षण भर में खत्म होय यह जग का सभी तमासा।।
सुबह शाम रट लिया करो, याद प्रभु को किया करो,
जो दुनियां का मालिक है नाम उसी का लिया करो।।

मनुष्य मात्र से प्रेम बढ़ाना सबमें प्रभु समाया।
मिलकर रहना सब हैं अपने, कोई नहीं पराया।।
दुख ना किसी को दिया करो, द्वेष भाव ना किया करो।
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

सच्चा सुख है प्रभु भक्ति में, बात न समझो झूठी।
वही मोक्ष पद पाते हैं जो, पीते नाम की बूटी।।
ओउम् नाम रस पिया करो, राघव भूल न किया करो,
जो दुनिया का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

गायत्री महामाया

गायत्री महामाया तेरा ध्यान लगाया।
तेरा ध्यान लगाया, तेरा ध्यान लगाया।।

जद मैं तेरे मन्त्र उचारे, कष्ट क्लेश मिट गये सारे
मन मेरा हर्षाया, तेरा ध्यान लगाया।

जद में तेरी माला फेरी, दूर हुई मन दी मैं मेरी।
सुख सागर लहराया, तेरा ध्यान लगाया।

जद मैं तेरे अर्थ विचारे, बुद्धि ते ताले खुल गये सारे।
सब विच प्रभु नूं पाया, तेरा ध्यान लगाया।

दुःखी दिलां दे कष्ट मिटांदी, गायत्री जपया शांति आंदी।
सब अंधकार मिटाया, तेरा ध्यान लगाया।

बुद्धि मेरी नूं उज्जवल कर दो, गागर दे विच सागर भर दो।
जो मंगया सो पाया, तेरा ध्यान लगाया।

प्रातः सायं जो उसे ध्याये, मन मंदिर में उसे बिठाये।
जीवन सफल बनाया, तेरा ध्यान लगाया।।

फल मिलता है कर्म से।
कर्म बनते है विचार से।
विचार बनते हैं बुद्धि से।
बुद्धि मिलती है गायत्री से।

करो गायत्री जाप

करो गायत्री जाप, मनवा धुल जायेगा
मारो जोर से थाप फाटक खुल जायेगा।।

अमृत वेले मंदिर आओ,
धीरे धीरे कदम बढ़ाओ।
मन में करो अलाप, मनवा

राम श्याम ने इसको गाया,
चारों वेदों में है आया
पढ़ कर देखों आप, मनवा

आनन्द स्वामी को आनन्द आया,
प्रभु आश्रित ने प्रभु को पाया।
श्वांस श्वांस से नाप, मनवा

100 वर्ष तक जीना चाहो,
अमृत रस तुम पीना चाहो।
गायत्री है मां बाप, मनवा

आशानन्द जब कष्ट कोई आवे,
गायत्री मां की गोद में जावे।
करता क्यों विरलाप, मनवा

गायत्री गीतिका

सब जग पैदा करने वाले
भक्तों के दुःख हरने वाले

प्राणों से भी प्राण प्यारे
सब के कष्ट मिटावन हारे

संकट मोचन नाम तिहारा
गावे सफल जगत ये सारा

काम क्रोध को दूर भगाओ
लोभ मोह अहंकार मिटाओ

राग द्वेष न व्यापे तन में
नम्र भाव रहे सदा मन में

निर्मल करो बुद्धि हमारी
अज्ञान वासना दूर हो सारी

ह्दय में प्रकाश हो तेरा
सांस–सांस में जाप हो तेरा

सत मार्ग चले कर्म कमावें
चार पदार्थ तुमसे पावें

गायत्री को जो सुनें सुनावें
सदा स्वतंत्र जीवन पावें

गायत्री मन्त्रार्थ

ओ3म् अकार उकार मकार।
तीनों मात्रों का एक ओंकार।

परमेश्वर का उत्तम नाम, जानते हैं इसे खासो आम।
अर्थ विचार करे जो जाप, क्यों न कट जायें उनके ताप।।

भू हे प्राणों का भी प्राण, भुवः सब दुःख छुड़ावनहार।
स्वः है पाप सदा सुखरूप, धर्मियों को करे मुक्तस्वरूप।

तत् उस ईश्वर से हम लोग, भक्ति भाव से करें संयोग।
सवितुर् जग का सृजनहार, रविशशि हैं जिसका चमत्कार।।

वरेण्यम् ग्रहण करने के लायक, भर्गः शुद्ध पवित्र सहायक।
देवस्य ज्योतिर्मय और ज्ञान, धीमहि उसका धरें हम ध्यान।

धियः बुद्धियों के अवगुण हरे, यो पूर्वोक्त हमारी सहायता करे।
प्रचोदयात का प्रेरणा अर्थ, शुभ गुणों की देवे सामर्थ्य।।

प्राप्त करें हम धर्म और अर्थ, बीत न जावे जन्म व्यर्थ।
तन मन धन से करें उपकार, गायत्री का अर्थ विचार।।

अमीचन्द सन्ध्या कर दो काल।
सत्य धर्म के नियम पाल।।

गायत्री महिमा

वरदायिनी हे गायत्री माता।
गुणगान तेरे संसार गाता।।

रक्षा करे प्रभु प्राणों से प्यारा।
दुःख दर्द नाशक दुनिया से न्यारा।
मानव प्रभु से ही सुख चैन पाता। वरदायिनी हे

सारे जगत को जिस ने रचाया।
है वरण के योग्य तू ने बताया।
आवागमन का फिकर छूट जाता। वरदायिनी हे

उस देव का शुद्धतम तेज धारें।
जीवन की हर एक नस में उतारें।
ऐसी कृपा आप कर दे विधाता। वरदायिनी हे

ईश्वर हमें नेक रस्ता दिखावे।
सन्मार्ग पर बुद्धियों को चलावे।
सद्ज्ञान देकर तमस् को मिटाता। वरदायिनी हे

आयु प्रजा प्राण पशुधन दिलावे।
कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चस् को पावे।
मां आपकी शुभ शरण में जो आता। वरदायिनी हे

तू पावनी सर्व कल्याणकारी।
पावन करे सब को महिमा तुम्हारी।
हम को पथिक नाम तेरा सुहाता। वरदायिनी हे

वो एक है

काबिरा कुंआ एक है पनिहारी अनेक।
बर्तन सबके न्यानरे हैं पानी सबमें एक।।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूल ही सींचिये, फूलहि फलहिं अघाय।।

सब आए इस एक में, डाल पात फल फूल।
रहिमन पीछे क्या रहा, गह पकड़ी जब मूल।।

जै वो एकै जाणियां, तो जाण्या सब जाण।
जै वो एक न जाणिया, तो सब ही जाण अजान।।

कबीरा एक न जाणिया, तो बहु जाण्या क्या होई।
एक तै ही सब होत है, सबहो एक न होई।।

प्रभु नाम एक अंक है सब साधन है शून्य।
अंक लगे दस गुण्य है अंक बिना सब शून्य।।

वैराग्य दोहे

माटी कहे कुम्हार सूं तू क्या रोंदे मोय
एक दिन ऐसा आएगा मैं रोंदूंगी तोय।।

आए है सो जाऐंगे राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चले एक बंधे जंजीर।।

मेरा मुझमे कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मोर।।

पत्ता टूटा डाली से ले गई पवन उड़ाय।
अबके बिछड़े कब मिले दूर पड़ेंगे जाय।।

तुम्हारी चाही में प्रभो है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करों मैं मूरख नादान।।

चलती चक्की देख के दिया कबिरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

कबिरा जब पैदा हुए जग हंसा तु रोए
ऐसी करनी कर चलो तू हंसे जग रोए।।

ओ३म् ओ३म् बोल मनवा

ओ३म् ओ३म् बोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल
जगह–जगह न डोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।।

जीवन सागर से तरने को
जन्म मरण के दुख हरने को
नाम बड़ा अनमोल–मनवा ओ३म् ओ३म् बोल।।

नाम ओउम् का है दुख भंजन
इस को जपते आप निरन्जन
मन की कुंडी खोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल

प्रीतम पाने जग में आया
हीरे जैसी तेरी काया
मिट्टी में न रोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल

नाम ओउम् का है सुख कारी
विघ्न विनाशक संकट हारी
इसका मीठा बोल मनवा ओ३म् ओ३म् बोल

ओ३म है परम् पिता

ओ३म् है परम् पिता का नाम
भजलो प्यारे ओ३म् का नाम

ओ३म् का नाम है अति पावन
ओ३म् का मन्त्र है अति मन भावन
ओ३म् का सुमिरन है अनमोल
ऋषि मुनियों ने देखा तोल।।

ओ३म् है वेदों का वरदान
ओ३म् का नाद है बह्मा समान
ओ३म् ही जीवन ओ३म् है प्राण
ओ३म् को सुमिरो आठों याम

ओ३म् कहो या कहो ओंकार,
ओ३म् की महिमा अपरम्पार
ओ३म् कहो तुम बारम्बार
ओ३म् ही करते भव से पार।

न तो देर है

न तो देर है न अंधेर है
तेरे कर्मो का सारा फेर है

नेकी की मन में जोत जगा ले
और जीवन के करले उजाले
लाखों तीरथ जाके नहा ले
मिटते नहीं कभी करमों के काले।।

नेकी जगत में जो भी करेगा
सर पे तेरे वो हाथ रखेगा
मुख से कुछ भी न कहना पड़ेगा
बिन मांगे ही वो सब कुछ देगा।।

अपना कर्म ही सुख देता है
अपना कर्म ही दुख देता है
कर्म बना जीवन देता है
कर्म मिटा जीवन देता है।।

रचना : विजय आनन्द

चाँद बादल में छुपा था मुझे मालूम न था
भूल कर मोह किया था मुझे मालूम न था
मैंने सोचा था कि दुनिया में रहूंगा कायम
कब्र मेरा वतन था मुझे मालूम न था।।

तेरो नाम

तेरो नाम सुख की खान।
किरपा कीजो कृपा निधान।।

जो जन जपते तेरो नाम।
उन पर तेरी किरपा महान।
जाने जाँ मेरे भगवान।। किरपा कीजो....

सारे जग के पालनहार।
बिगड़ी किस्मत तू ही संवार।।
खेवन हार मेरे भगवान।
किरपा कीजो किरपा निधान।।

तेरे नाम में शक्ति भारी।
तूने तारी सृष्टि सारी।।
तारनहार मेरे भगवान।
किरपा कीजो किरपा निधान।।

तू मेरा स्वामी, दास मैं तेरा।
तेरे बिन कोई न मेरा।।
बख्शो–बख्शो मेरे भगवान।
किरपा कीजो किरपा निधान।।

एक न एक शम्मा अंधेरे में जलाए रखिए
सुबह होने को है माहोल बनाए रखिए
कौन जाने वो किस राहगुज़र से गुज़रे
हर राहगुज़र को फूलों से सजाए रखिये।।

प्रभु तेरी शरण में

प्रभु तेरी शरण में हम सब आये
शरण में आए प्रभु शीश झुगाये।।

तेरे ख़ज़ाने भरे मेरे दाता।
क्या मांगे हम तुझसे विधाता।
बिन मांगे ही सब बरसाए।।

फूल मिले या मिले चाहे कांटे।
तेरा प्रसाद है सब तूने बांटे।
सुख दुख हो सब हंस के बिताए।।

माटी या कंचन सब स्वीकारूँ।
तू बिसराए मुझे मैं न बिसारूँ।
तेरे चरणों से रहूँ प्रीत लगाए।।

रचना : कंचन कुमार

दिन जिन्दगी है चार कुछ काम करके जा
इन्सानियत का ना न बदनाम करके जा
किसी भूखे को रोटी दे समझ उसको रिझायेगा
किसी का छीन न खाना बल्कि दान करके जा।।

मेरे प्राणों के आधार

मेरा छोटा सा संसार प्रभु आ जाओ एक बार।
मेरे प्राणों के आधार प्रभु आ जाओ एक बार।।

मैंने बहुत गुनाह जीवन में किए।
अमृत छोड़े और ज़हर पिए।
मेरी नाव पड़ी मंझधार।।

मैं जनम–जनम से तेरी हूं।
तू मेरा है मैं तेरी हूँ।
अब दर्शन दो एक बार।।

विषयों में उमर गंवाई है।
अब याद प्रभु तेरी आई है।
मुझे भव से कर दो पार।।

तेरी याद में आठों याम रहे।
मेरा तेरी शरण में ध्यान रहे।
तेरी कृपा से है संसार।।

सत्संग की नगरी में आता है कोई–कोई।
रोती तो सारी दुनियां है गाता है कोई–कोई।।
रंगरलियों की गलियों में तो जहान घूमता है।
पर प्रेम की गली में आता है कोई–कोई।।

मांग बन्दे मांग

तर्ज : दिल के अरमाँ

मांग बन्दे मांग उस भगवान से,
क्या मिलेगा मांगकर इन्सान से।

मिल गया जो जिन्दगी की राह में,
सबको ना दाता समझ अज्ञान से।

है वही सारे जमाने का पिता,
उसका ही दामन पकड़ जी जान से।

ले बना साथी सखाओं का सखा,
फिर तुझे डर खौफ क्या तूफान से।

देख ले घर में बैठा है कोई,
मिल जरा एक बार उस मेहमान से।

तज सुपथ को क्यों कुपथ पर चल पड़ा
हो गयी गलती पथिक नादान से।।

तेरा दर्श पाने को जी चाहता है।
खुदी को मिटाने को जी चाहता है।।
ये दुनिया है सारी नजर का ही धोखा।
तुझी में समाने को जी चाहता है।।

ओ3म् नाम मन मेरे

तर्ज : परदेसी–परदेसी जाना नहीं

ओ3म् नाम ओ3म् नाम मन मेरे
गाले ओ3म् नाम जप ले ओ3म् नाम।।
ओ3म् नाम जग में सबसे है प्यारा।
सुख दुख में वो ही है सबका प्यारा।।

तेरे ही जलवे रंगीन नजारों में।
खुश्बू तेरी हवा में चमक सितारों में।
तू फूलों में कलियों और बहारो में।
तू दरिया की लहरों में तू किनारों में।।
कण कण में भगवन वास तुम्हारा।
तेरा नाम जग में सबसे है प्यारा।।

इस जग का करता तू ही आधार तू ही।
माता पिता बन्धु सबका भरता तू ही।।
जग को देने वाला एक दातार तू ही।
सबका मालिक तू ही पालनहार तू ही।।
तेरा नाम जग में सबसे है प्यारा।
सुख दुख में वो ही है सबका सहारा।

कोई शब्द कहे कोई कहे नूर है तू।
कहे कंचन पर कुछ न कुछ जरूर है तू।।
बसा सभी के दिल में फिर भी दूर है तू।
कोई न पहचाने पर मशहूर है तू।।
तेरा नाम जग में सबसे है प्यारा।
सुख दुख में वो ही है सबका सहारा।।

रचना : कंचन कुमार

शब्दों में भाव सजे

शब्दों में भाव सजे, सुर में संगीत बजे।
होठों पे भक्ति गीत सजा दो प्रभु जी मेरे।।
भावों की अंजलि से, मन के गंगाजल से।
अभिषेक करूँ मुझे रीत सीखा दो प्रभु जी मेरे।।

तेरी कृपा से प्राणी है जगती पल।
संकट से करता तू ही उद्धार।
अपनी भक्ति की शक्ति दे मुझको।
ध्यान करूँ निशदिन तेरा करतार।
कैसे गुणगान करूँ सिमरन तेरा ध्यान करूँ।
इस ह्दय में अपनी जोत जगा दो प्रभु जी मेरे।।

तुम करूणा के सागर हो करतार।
निशदिन मैं अपनाऊँ तेरा प्यार।
सकल चराचर जीवों के स्वामी।
तुम ही पार लगाते हो मंझधार।
जीवन की राहो पर, मेरे पाँव थके न कभी।
मेरे मन में ऐसी प्रीत जगा दो प्रभु जी मेरे।।

ये दुनिया एक सराय फानी देखी
हर चीज़ यहां पर आनी जानी देखी
जो आके न जाये वो बुढ़ापा देखा
जो जा के न आये वो जवानी देखी।।

इस जग दे विच

इस जग दे विच सब परदेसी
तू होंवे या मैं होवां
कल किसी ने रोणां मैंनू
आज किसी नूँ मैं रोवां

किसको अपना कहता फिरता
कौन किसी का साथी है
मरते दम इस आँख को देख ले
वो भी है कि फिर जाती है
मिट्टी विच सबने मिल जाणां तू होंवे या मैं होंवा

दुनिया एक सराय देखी
हर शय आनी जानी है
जो आके न जाय बुढ़ापा
जाके न आए जवानी है
कहे कंचन सबने चले जाणां तू होवे या मैं होवा

रचना : कंचन कुमार

नजर उठे तो दुआ होती है
नजर झुके तो हया होती है
नजर तिरछी हो तो अदा होती है
नजर–नजर से मिले तो कज़ा होती है

वे जोगिया जग है एक सराए

वे जोगिया जग है एक सराए।
कौन रहा है कौन रहेगा
एक आए एक जाए
अपनों का ये मेल है झूठा
हंस अकेला जाए रे

जिसका जितना दाना पानी।
उतना ही वो पाए।
बूंद न सिमटे सागर में कभी।
सागर बूंद समाए रे।।

सुख के उजियारे के पीछे।
दुख के हैं साए।
जान के भी अन्जान बने हैं।
कौन किसे समझाए रे।।

सिर्फ बिजली ही गिरी हो ये जरूरी तो नहीं।
आग गुलशन में बहारें भी लगा सकती हैं।।
किसी आगोश में हो ये सर जरूरी तो नहीं।
नींद तो दर्द के बिस्तर पे भी आ सकती है।।

भजन बिना नर बावरे

भजन बिना नर बाबरे तूने हीरा जन गंवाया।
कभी न आया प्रभु की शरण में न ही प्रभु गुण गाया।।

ये संसार हाट बनिये की, सब जग सौदा लाया।
चातुर माल चौगुना कीन्हों, मूरख मूल गंवाया।।

ये संसार फूल सेमल का, सुआ देख लुभाया।
मारी कोच रूई निकसाई सिर धुन–धुन पछताया।।

ये संसार माया का लोभी ममता महल बनाया।
कहता कबीर सुनो भई साधो हाथ कुछ न ही आया।।

दिलो दिमाग पे छा गई रोटी।
हाय किस मोड़ पर आ गई रोटी।।
आदमी तो उसे खा नहीं सका।
आदमी को ही खा गई रोटी।।

परदेसी हंसा

परदेसी हंसा जिन्दड़ी नू रोग न ला
झूठे जग दी प्रीत है झूठी
किसे नाल करी न वफा।

इस जग दे विच कोई न तेरा।
क्यों करदा है मेरा–मेरा।
इस दिल विच रब नू बसा।।

मानुष चोला सुन्दर मिलया।
माया दे विच रब नूं भुलया।
इस दम दा कोई न विसा।।

जे तू अन्दर झांति मारे।
सत चित आनन्द दर्शन पावे।
जीवन सफल बना।।

तेरे अन्दर प्रीतम प्यारा।
जगमग जोत होए उजियारा।
अन्दर सुरति जगा।।

कोई आए–कोई जाए

कोई आये, कोई जाये ये तरीका क्या है
कुछ समझ में नहीं आता ये माज़रा क्या है।

आने वाला तो चला जाता है वापिस लेकिन।
जाने वाला नहीं आता, ये तमाशा क्या है।।

तेरे ऐबाब तेरे दोस्त तेरे घरवाले।
तुझे मिट्टी में मिला देंगे समझता क्या।।

दम निकलते ही लगा बोझ सभी को मालूम।
जल्दी ले जाओ अब इस ढेर में रक्खा ही क्या है।।

दफन के बाद ये तसल्ली भी दिये जाते हैं।
रफता–रफता सभी आ जायेंगे डरता क्या है।।

दो घड़ी रोंयेगे ऐबाब तेरे ऐ ''कामिल''।
फिर हमेशा को भुला देंगे समझता क्या है।।

शोहरत की बुलन्दी।
पल भर का तमाशा है।
जिस शाख पर बैठे हो,
वो टूट भी सकती है।।

दुनिया फानी

दुनिया फानी है ये दुनिया फानी।
एक दिन सबको जाना होगा, क्या राजा क्या रानी।।

ये दुनिया है एक सराय।
कोई आए तो कोई जाए।।
रहना होगा तब तक यहां पर,
जब तक दाना पानी।।

इस जग की झूठी माया।
यहां कोई न रहने पाया।
रावण कंस दुर्योधन जैसे, बड़े–बड़े अभिमानी।।

आयु पल–पल बीत रही है,
तेरे सिर पर मौत खड़ी है।
कोई चीज़ नहीं पुख्ता यहाँ,
हर शय आनी जानी।।

जो किसी का ऋणी नहीं है,
जो परदेस में नहीं रहता,
जो यौवनावस्था में दरिद्र नहीं है,
जो दूसरे के घर में नही रहता है,
हे जलचर यक्ष दुनिया में वही सुखी है।

किसने दीप जलाया

किसने दीप जलाया,
किसने दीप जलाया।
दीप जलाकर किया उजाला,
अपना आप छिपाया।।

लहर रहा आंखां के आगे,
सागर ये सुषमा का।
किसने रूप दिया जल थल को,
किसने व्योम सजाया।।

स्त्रोत कहाँ है इस सागर का,
है कितनी गहराई।
सागर ने क्यों अपने भीतर,
अपना स्त्रोत छिपाया।।

है वह कौन कहाँ का वासी,
कैसे कोई बताये।
नहीं किसी ने देखा उसको,
सन्त जनों ने गाया।।

–केन उपनिषद् के आधार पर

एक से फूल गुलिस्ताँ में खिला करते हैं
मगर हर फूल की तकदीर जुदा होती है।।

समय का पहिया

समय का पहिया चलता है,
समय का पहिया चलता है।
इस पहिये के साथ सभी का,
भाग्य बदलता है।।

करे नौकरी मरघट की वो हरिश्चन्द्र सा दानी।
राजकुंवर की लाश को लेकर आई उसकी रानी।
उस राजा का पुत्र भी देखो, बिन टैक्स न जलता है।।

अवधपुरी के रहने वाले दण्डक वन में आए।
चौदह वर्ष सहे दुख वन में फिर भी हैं हरषाए।
माता पिता की आज्ञा से ही राज बदलता है।।

गाण्डीव का धारी वो अर्जुन, भीम गदा का धारी।
भरी सभा में रोती है उन पाँचों की नारी।
देख रहे हैं पाँचों पाण्डव, जोर न चलता है।।

दूसरों को जिन्दगी दे तब मज़ा जीने में है।
ग़मज़दों को तो खुशी दे तब मज़ा जीने में है।
दोस्तों को दोस्त कहकर तो सब बुलाते हैं।
दुश्मनों को दोस्ती दे तब मज़ा जीने में है।।

अगर तू चाहता है

अगर तू चाहता है कल्याण, तो मेरी शरण में आ–2।
भटक मत दर–दर बीच जहान, तू मेरी शरण में आ–2।।

मोह ममता में पड़कर तूने लाखों कष्ट उठाए–2।
जीवन सारा व्यर्थ गंवाया दर–दर ठोकर खाए।
जो बीता सो बीता नादान, इसे न व्यर्थ गंवा।।

जिनसे तू ने प्रेम बढ़ाया देंगे एक दिन धोखा।
सब तज, देंगे एक दिन तुझको है ये खेल अनोखा।
ये रिश्ते नाते कुछ दिन जान, चित्त तू न भरमा।।

मानव जीवन पाकर भी तू करता रहा मनमानी।
कभी न मेरा सुमिरन किन्हा करता रहा नादानी।
अब भी कर ले सुमिरन ध्यान जो चाहे तू कृपा।।

दस प्रकार के लोग धर्म को नही मानते
नशे में मतवाला, पागल, जो थका हो,
जो क्रोधी हो, जो भूखा हो, जल्दबाज,
जो लोभी, जो कामी तथा जो भयभीत हो।

तेरी उम्र गुज़रती जाए

तेरी उम्र गुजरती जाए, भजन कर ले ओ3म का।
भज ओ3म नाम सुख चाहे, भजन कर ले ओ3म का।।

नाम ओ3म का सबसे प्यारा, सब कष्टों से तारनहारा।
इसी नाम ने तारे अनेको, इसे जप तू भीतर जाए।।
भजन कर के ओ3म का .....

भक्त जपे ये नाम निरन्तर, गाते आठों याम निरन्तर।
मन में जला ले ज्योति नाम की, तेरा जनम सफल हो जाए।।
भजन कर के ओ3म का .....

भजन बिना बीते दिन तेरे, दुख उठाए तूने घनेरे।
जीवन ये अनमोल मिला है, तू ये बार–बार नहीं पाए।।
भजन कर के ओ3म का .....

दरिद्रता, रोग, दुख, बन्धन, व्यसन
ये सब दान न देने के फलस्वरूप
प्राप्त होते हैं। इनसे बचने के लिए
दान करना चाहिए।

हे परमेश्वर

हे परमेश्वर दया करो।
सबके सारे कष्ट हरो।।

सभी जगह दरबार तेरा।
खुला हुआ भण्डार तेरा।
खाली दामन सबके भरो।।

हम सब तेरी शरण में आए।
हाथ जोड़कर शीश झुकाए।
निज करुणा का हाथ धरो।।

बैठे है हम आस लगा के।
मन मन्दिर को साफ बना के।
हर मन मन्दिर में विचरो।।

जग के पालन हार तुम्ही हो।
सबके प्राणा धार तुम्ही हो।
तन मन जीवन में उतरो।।

जब विषयों की लू चलती है।
तब अन्दर की भू जलती है।
प्यार के बादल बन के झरो।।

अब तो मन की चाह यही।
भरा हुआ उत्साह यही।
इक पल भी तुम न बिसरो।।

दया करो भगवान

दया करो भगवान हम पर दया करो।
हे प्रभु कृपा निधान हम पर दया करो।।

हम सब बालक शरण तुम्हारी।
सुन लो भगवन विनय हमारी।
दो बुद्धि का दान–हम पर दया करो।।

शुभ कर्मो में मन को लगायें।
दुष्कर्मो से चित्त हटाये।
हो सबका कल्याण – हम पर दया करो।।

तेरी भक्ति में तन मन हो।
शुद्ध सरल सबका जीवन हो।
जीवन बने महान हम पर दया करो।।

राम कृष्ण की संस्कृति पाले।
सेवा अपना धर्म बना ले।
बने वीर हनुमान–हम पर दया करो।।

वीर बने हम श्रद्धानन्द से।
दयाशील हो दयानन्द से।
दे घातक को दान–हम पर दया करो।।

सकल विश्व को आर्य बनावे।
पावन वैदिक ज्योति जगावे।
करें वेद का गान – हम पर दया करो।।

एक ओ३म् नाम में है

एक ओ३म् नाम में है सदगुण सारे।
ओ३म् साधना कष्ट निवारे, भक्ति मार्ग संवारे।।

भोर गए जब अमृत बेला ओ३म् का हो उच्चारण।
आत्मा परमात्मा में समाए प्रभु का हो बस सुमिरन।।
मन सुख पाए .....

सांझ ढले मन भारी हो, छाई उदासी कारी हो।
ऐसे पल में ध्यान लगा ले सुख छा जाए आए उजाले।।
आशा एक निराली हो .....

कोई पाप या लोभ सताए भूल जा सब ओ३म् जप ले।
दुष्कर्मो का संग जो आए, सत्संगी का संग ले।
चैन मिलेगा पल पल मन में ओ३म् सिमर ले।।

जलती अग्नि से सोने की पहचान होती है।
व्यवहार से साधू की पहचान होती है।
सत्पुरुष की पहचान सदाचार से,
भय से शूर की पहचान होती है।
धीर की गरीबी में तथा
विपत्ती में मित्र की पहचान होती है।

मेरा नाथ तू है

मेरा नाथ तू है मेरा नाथ तू है।
नहीं मैं अकेला मेरे साथ तू है।।

चला जा रहा हूँ, मैं राह पे तुम्हारी।
राहों मे आए जो तूफान भारी।
थामे हुए जो मेरा हाथ तू है।।
नहीं मैं .....

मेरा इष्ट तू है मैं तेरा पुजारी।
तेरा खेल मैं हूं तू मेरा खिलाड़ी।
मेरी जिन्दगी की हर एक बात तू है।।

तेरा दास हूँ, मैं तेरे गीत गाऊँ।
तुझे भूल के भी न कभी भूल पाऊँ।
तू ही दीन बन्धु पितु मात तू है।।
नहीं मैं .....

भजन बढ़ाना चाहिये तथा,
भोजन कम करना चाहिए।
जीने की कला है – कम खाओ
और गम खाओ।

भगवान मेरी नैया

भगवान मेरी नैया–2, उस पार लगा देना।
अब तो निभाया है–2, आगे भी निभा देना।।

दल बन के साथ माया घेरे जो मुझको आके।
तुम देखते न रहना, झट आके बचा लेना।।

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ दया करे, मुझको न भुला देना।।

तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
ये बात अगर सच है सच करके दिखा देना।।

यारों सफर का कुछ सरो सामान तो करो।
जाना कहाँ है तुमको कुछ ध्यान तो करो।।

जितना कम समान रहेगा।
सफर उतना आसान रहेगा।।

एक मन्त्र जपो रे

एक मन्त्र जपो रे मन
ओ३म् ओ३म् ओ३म्
ओ३म् नाम ही जीवन
ओ३म् ओ३म् ओ३म्
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

दुख में ओ३म् सुख में ओ३म्।
धूप में भी छाँव ओ३म्।।
दूर ओ३म् पास ओ३म्।
आस ओ३म् प्यास ओ३म्।।
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

स्वर है ओ३म् गीत ओ३म्।
प्रेम ओ३म् मीत ओ३म्।।
हर निर्बल का बल है ओ३म्।
ज्ञान ओ३म्, प्रीत ओ३म्।।
ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

रचना : कंचन कुमार

तुम मेरे जीवन के धन

तुम मेरे जीवन के धन हो और प्राणाधार हो।
एक तुम दाता दयालु सबके पालन हार हो।।

जागते सोते कभी भी मैं तुम्हे भूलूँ नही।
भेष दो राजा का मुझको या गले मत हार हो।।

भर रहा धन धान से ही सबके ही परिवार को।
देके तुम थकते नहीं हो ऐसी तुम सरकार हो।।

जप रहे तेरा नाम पंछी, गीत गाती है पवन।
रंग रहे रंगों से जग को, अजब रचनाकार हो।।

जिन्दगी की नाव मैंने, सौंप दी, प्रभु आपको।
तुम डुबाओ या बचाओ, मेरे खेवन हार हो।।

दंगा उपद्रव होने पर,
शत्रु द्वारा अचानक आक्रमण होने पर,
भयंकर दुर्भिक्ष में, अकाल में,
दुष्टों का संग होने पर,
जो भागता है वही बचता है।

जिस भजन में

जिस भजन में ओ3म् का नाम न हो
उस भजन को गाना न चाहिए

चाहे बेटा कितना प्यारा हो उसे, सिर पे चढ़ाना न चाहिए।
चाहे बेटी कितनी लाड़िली हो, घर–घर में घुमाना न चाहिए।।

जिस माँ ने हमको जन्म दिया, दिल उसका दुखाना न चाहिए।
जिस पिता ने हमको पाला है, उसे कभी सताना न चाहिए।।

चाहे दोस्त कितना प्यारा हो, उसे भेद बताना न चाहिए।
चाहे भैया कितना बैरी हो उससे राज छुपाना न चाहिए।।

चाहे कितनी अमीरी आ जाए, अभिमान दिखाना न चाहिए।
चाहे कितनी गरीबी आ जाए, दाता को भुलाना न चाहिए।।

पुरूषार्थी के पास दरिद्रता नहीं आती।
जप करने वाले के पास पाप नही आता।।
मौन रहने वाले की कभी लड़ाई नहीं होती।
जागने वाले को कभी भय नहीं रहता।।

पीकर प्याला

पीकर प्याला ओ३म् नाम का,
बन मतवाला रे तू बन बतवाला रे।

ओ३म् नाम का है ये प्याला।
सदा शांति सुख देने वाला।
चारों वेदों ने गाया ये मन्त्र निराला रे।।

ओ३म् नाम की अमृत धारा।
पी प्रह्लाद बना प्रभु प्यारा।
डरा न पाए उसे तीर तलवारे भाला रे।।

दयानन्द ने पिया ये प्याला।
किया जगत पे ज्ञान उजाला।
प्यारी भारत माता का सब संकट टाला रे।।

'अभय' अमर पद निश्चय पाता।
बाधाओं से नहीं घबराता।
कर्मवीर बन कर्म क्षेत्र से टले न टाला रे।।

मेरे मालिका

मेरे मालिका मैं जपूं तेरा नाम।
मेरे साहिबा मैं जपूं तेरा नाम।।
जपूं सुबहो शाम, आठों याम।
मेरे दातेया मैं जपूं तेरा नाम।।

करूणा के सागर दया के हो दाता।
तुम्ही सबके तारन हारे सबके विधाता।
शरण लगा, जपूँ तेरा नाम।।

तेरा हो के आ गया रख चाहे मार दे।
बीच भंवर में रख चाहे मुझे तार दे।
कर किरपा, जपूँ तेरा नाम।।

मेरा तो जग में सहारा तेरा नाम है।
दुख दरिया दा किनारा तेरा नाम है।
पार लगा, जपूँ तेरा नाम।।

रचना–कंचन कुमार

करो मन ओ३म् का

करो मन ओ३म् का सिमरन, अगर मुक्ति को पाना है।
अरे बाबा ये वो घर है जो एक दिन छोड़ जाना है।।

न पाँवों से गया सत्संग, किया न दान हाथों से।
जुबाँ से न किया सुमिरन, तेरा किस जाँ ठिकाना है।।

अवस्था जा रही तेरी, बचा ले ओ३म् सिमरन से।
तेरे कर्मो का सब परिचय, तेरे दर पेश आना है।।

जो रिश्तेदार हैं तेरे जिन्हो ंसे है तेरी उल्फत।
उन्होंने रख के अग्नि में तुझे एक दिन जलाना है।।

तेरे दम में जो दम आता तुझे खुद ही नजर आता।
बना ले खर्च ए बन्दे वहाँ जो पहुंच खाना है।।

दिन में ऐसा काम करो कि रात्री में सुखपूर्वक नींद आए
आठ माह में ऐसा काम करो कि वर्षा ऋतु में सुखपूर्वक रह सको
जवानी में ऐसा काम करो कि बुढ़ापा ठीक से बीत सके
लोक में ऐसा काम करो कि परलोक में सुख से रह सको।

हर हाल में दाता का

हर हाल में दाता का जो शुकर मनाते है।
उनके घर खुशियों की होती बरसाते हैं।।

है याद जिन्हे दाता हर दात मिले उनको।
बिन मांगे खुशियों की सौगात मिले उनको।
सुख पाकर भी सुख में, नहीं मन भरमाते हैं।।

ज्यादा में शुकर कीजे थोड़े में सबर कीजे।
फिर उनकी रहमत को दामन में भर लीजे।
ये बातें जो माने वो ही सुख पाते हैं।।

हर सुख देने वाले दाता को न भूलें।
सत्संगत खुशियों के झूले में वो झूले।
आदर्श जो वेदों का इस मन में बसाते हैं।।

बिना अग्नि के जलाते हैं–
पत्नी का विरह, अपनों से अनादर।
बचा हुआ कर्ज, दुष्ट राजा की सेवा।
दरिद्रता तथा मूर्खों की सभा।
ये सब बिना अग्नि के मनुष्य को जलाते हैं।

आओ विचार करें

आओ मिलके विचार करें।
पहले हम आप सुधरे, फिर ओरों का सुधार करें।।

बचें पाप की कमाई से।
सदा शुभ कर्म करें, रहे दूर बुराई से।।

यहाँ सब रह जायेगा।
दिया हुआ जो हाथ से, वही साथ निभायेगा।।

है सभी मेहमान यहाँ।
करके भलाई जो गये, है उनके निशान यहाँ।।

हम भी ऐसे काम करे।
जब तक दुनिया रहे, सूरज की तरह चमके।।

भगवान को याद करें।
जीवन कीमती है, न इसे बरबाद करें।।

यह कामना सेवक की।
प्रभु हमें दो सुमति, यह भावन है सबकी।।

ओ३म् नाम भज लो

तर्ज : कभी राम बनके कभी ....

ओ३म् नाम भज ले, सुबह शाम भज ले,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

निज ओ३म् नाम ईश्वर का,
वो दाता जगती भर का।
उस पे विश्वास कर उसकी ही आस कर,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

वो सबका पालन हारा,
जग में उसका उजियारा।
पिता मात वही सखा भ्रात वही,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

बिन हाथों जगत रचाया,
कण–कण में वो ही समाया।।
गाते ज्ञानी गुणी, संत योगी मुनि,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

जो चाहे तू, सुख पाना,
उस प्यारे को न भुलाना।
उससे प्रीत लगा, गीत उसके ही गा,
मन मेरे अरे ओ मन मेरे।।

गायत्री महिमा

गायत्री महिमा कहें सुनो सदा मन लाय।
जीवन को सफली करो, वर माता का पाय।।

गायत्री की गोद में, माँ जैसा है प्यार।
प्रातः सायं बैठिये, मोह अभिमान को मार।।

गायत्री देगी सदा, सरे बन्धन खोल।
ये जीवन अनमोल है, बोल इसी के बोल।।

गायत्री माता तुम्हें, सिमरे बारम्बार।
अपना भक्त बनाय के, नाव उतारो पार।।

गायत्री के भक्त में, दया प्रेम का वास।
आगे ही बढता रहे, रहे नही उदास।।

माँ तेरे ही जाप से, मिले प्रभु का प्यार।
जीवन में शक्ति मिले, खुले स्वर्ग का द्वार।।

गायत्री का ध्यान जो, करे सुबह और शाम।
प्रतिदिन के अभ्यास से, मिले उसी का धाम।।

बुद्धि की वृद्धि करो, शक्ति तुम्हारे पास।
हे माँ दो शक्ति हमें, बने तुम्हारे दास।।

गायत्री के जाप से मिले उसी का धाम।
प्रतिदिन प्रातःकाल जो भक्ति करे निष्काम।।

रचना : डॉ0 योगेन्द्र शास्त्री

नहीं चाहिये

तर्ज : मुझे प्यार की.....

नही चाहिए दिल दुखाना, किसी का।
सदा न रहा है, सदा न रहेगा जमाना किसी का।।

आएगा बुलावा तो जाना पड़ेगा।
सर तुझको आखिर झुकाना पड़ेगा।
वहाँ न चलेगा बहाना किसी का।।

शोहरत तुम्हारी बह जाएगी ये।
दौलत तुम्हारी रह जाएगी ये।
नहीं साथ जाता खजाना किसी का।।

सुख और दुख में सबर करना सीखे।
अपनी कमाई में गुजर करना सीखे।
न सीखे कभी हक दबाना किसी का।।

एक दूसरे की न पगड़ी उछाले।
खुद की कमी को सदा हम निकाले।
सुनाए न हरदम फसाना किसी का।।

बेंत कहे बाप से तू क्या डाँटे मोय।
एक दिन ऐसा आयेगा, मैं डाटूँगा तोय।।

बहे सत्संग की गंगा

बहे सत्संग की गंगा, अरे मन चल नहा आए।
बुझी ज्योति जो जीवन की, उसे फिर से जगा आए।।

यही बेला है कर ले पान प्यारे ज्ञान अमृत का।
लगा है धर्म का मेला, अरे मन चल दिखा लाएँ।।

तू ही योद्ध तू ही योगी तू ही है रूप संतो का।
जिसे तू भूल बैठा है उसे फिर से दिखा लाए।।

भटकता फिर रहा दर–दर, धराया नाम क्यों चंचल।
करे विश्वास जग तेरा तुझे ऐसा बना लांए।।

मूर्ख शिष्य को पढ़ाने से,
दुष्ट स्त्री का भरण पोषण करने से,
दुखीजनों से व्यवहार करने से,
बुद्धिमान मनुष्य भी दुख उठाता है।

कभी प्यासे को

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं।
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं।
बाद आंसु बहाने से क्या फायदा।।

मैं तो मंदिर गया पूजा आरती की।
पूजा करते हुए ये ख्याल आ गया।।
कभी माँ बाप की सेवा की ही नहीं।
सिर्फ पूजा के करने से क्या फायदा।।

मैं तो सत्संग गया गुरुवाणी सुनी।
गुरुवाणी को सुनकर ये ख्याल आ गया।।
जन्म मानव का लेकर दया न करी।
फिर मानव कहलाने से क्या फायदा।।

गंगा नहाने हरिद्वार काशी गया।
गंगा नहाते ही मन में ख्याल आ गया।।
तन को धोया मगर मन ने धोया नहीं।
फिर गंगा नहाने से क्या फायदा।।

मैंने वेद पढ़े मैंने शास्त्र पढ़े।
शास्त्र पढ़ते हुए ये ख्याल आ गया।।
मैनें ज्ञान किसी को बांटा नहीं।
फिर ज्ञानी कहलाने से क्या फायदा।।

माता पिता के चरणों में चारों धाम है।
आजा आजा ये ही मुक्ति का धाम है।।
पिता माता की सेवा की ही नहीं।
फिर तीर्थो में जाने से क्या फायदा।।

कुछ पल की ज़िन्दगानी

कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज सबको जाना।
वर्षो की तू क्यों सोचे, पल का नहीं ठिकाना।।

मल मल के तूने अपने तन को जो है निखारा।
इत्रों की खुशबुओं से महके शरीर सारा।
काया न साथ जानी ये बात न भुलाना।।

मन है हरि का दर्पण, मन में इसे बसा ले।
करके तू कर्म अच्छे, कुछ पुण्य धन कमा ले।
कर दान और धर्म तू रब को अगर है पाना।।

आएगी वो घड़ी जब, कोई न साथ होगा।
कर्मो का तेरे सारे एक एक हिसाब होगा।
ये सोच ले अभी तू ये वक्त फिर न आना।।

कोई नहीं है तेरा क्यों करता मेरा मेरा।
खुल जाए नींद जब भी समझो वही सवेरा।
हर भोर की किरण संग हरि का भजन तू गाना।।

कटु बोलने वाली पत्नी हो, धूर्त शठम मित्र हो
उत्तर देने वाला नौकर हो, साँप वाला घर हो
ये सब मृत्यु के समान ही हैं।

वैदिक कीर्तन

तर्ज : छोटी–छोटी गईया .....

नाम प्रभु का प्यारा ओ३म्।
प्यारा ओ३म् प्यारा ओ३म्।।

अमृत रस की धारा ओ३म्।
प्यारा ओ३म् प्यारा ओ३म्।।

कण कण में विस्तारा ओ३म्।
दाता पालन हारा ओ३म्।।

सब दुनिया का अधारा ओ३म्।
हर दुख में है सहारा ओ३म्।।

दिल से कभी क्या पुकारा ओ३म्।
सुन मुक्ति का द्वारा ओ३म्।।

रचना : कंचन कुमार

चार कामों में कोई साथ नहीं देता
ये कार्य स्वयं करने होते हैं –
भोजन, भजन, लग्न, मृत्यु।

ओ३म् जपा करो

तर्ज : तुम्हारा ..... इन्तजार है

ओ३म् जपा करो ओ३म् जपा करो।
सहारा मिल ही जाएगा।।
मन्त्र ये महान है ध्यान तो धरो।
किनारा मिल ही जाएगा।।

क्यों भटक रहे यहाँ किसके वास्ते।
कौन है यहाँ तुम्हारा क्या तलाशते।।
मुक्तसर सवाल है कुछ जवाब दो।
ईशारा फिर ना आएगा।।.... ओ३म् जपा करो

कैसे बात–बात में ढल गई उमर।
वक्त वो न हाथ आए, जो गया गुजर।।
देर हो गई मगर फिक्र न करो।
तुम्हारा दर्द जाएगा।। ..... ओ३म् जपा करो

मन है मीन जान ले, मोह जाल है।
फाँस है सुखों की आशा, सर पे काल है।।
जन्म ये अमोल है देर न करो।
दोबारा ये न आएगा।।..... ओ३म् जपा करो

प्रेम के बहाव में तैरते रहो।
जीव जीव में हरि को देखते रहो।।
धर्म की डगर धरो डर सभी तजो।
सितारा जगमगाएगा।।..... ओ३म् जपा करो

अपने मन को जरा

तर्ज : इतनी शक्ति हमें देना दाता

अपने मन को जरा तुम सम्भालो।
वो कहाँ है कहाँ जा रहा है।।
किस तरफ मंजिलें है तुम्हारी।
किस तरफ वो लिए जा रहा है।।

इन्द्रियाँ तो विषय की है प्यासी, वो तो बस मौज ही चाहती है।
किसमें होगी तुम्हारी भलाई, वो जरा भी नहीं जानती है।
नॉव मंझधार में है तुम्हारी, ये भंवर की तरफ जा रहा है।।
किस तरफ मंजिले है .....

ज्ञान अपने लिए है जरूरी, तुम दिखावा किए जा रहे हो।
अपनी जीवन की सारी कमाई, क्यों गंवाते चले जा रहे हो।
उम्र यूं ही ढली जा रही है, मन फंसाता चला जा रहा है।।
किस तरफ मंजिल है .....

कुल की रक्षा के लिए एक का बलिदान,
ग्राम की रक्षा के लिए कुल का बलिदान,
पूरे जनपद शहर के लिए गाँव का बलिदान,
एवं आत्मरक्षा के लिए सारी पृथ्वी को,
छोड़ना पड़े तो छोड़ देना चाहिए।

गम न करो

तर्ज : जाने वो कैसे लोग थे जिनको

गम न करो गर दुनियाँ में, कांटो का हार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

ग्रह नक्षत्र सितारे बादल बनकर छाते है।
करनी के बीजों पर अपना जल बरसाते हैं।।
सुखदुख अपने कर्मो का तुमको उपहार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

बिखर गया–2 गर सपना तो तुम उसका गम न करो।
सपनों जैसी दुनिया में अपनो का दम न भरो।
एक हरि सच है सबको जीवन का सार मिला।।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

आशाएँ मन में रखना तो कोई दोष नहीं।
बात न बन पाए तो प्यारे खोना होश नहीं।।
कौन यहाँ ऐसा है जिसको यश हर बार मिला।
शुक्र करो हर पल तुमको हरि का आधार मिला।।

मन हरि ओ३म् गा ले

मन हरि ओ३म् हरि ओ३म् गाले।
नाम जपने की आदत बना ले।।

पुण्य तेरा बढ़े जब सत्संग मिले।
दाता रहमत करे जब सद्गुरु मिले।
इस रीति से सबको रिझाले।।

तुझको जिसने दिया इसका मालिक वही।
मुफ्त में ही कभी नाम जपता नहीं।
कुछ किराया ही उसका चुका ले।।

कौन धड़कन से दिल की चलाए रे मन।
कौन नाड़ी में रक्त बनाये रे मन।
उस दाता का शुकर मना ले।।

जग रिझाने में जीवन गंवाना नही।
एक पल भी प्रभु को भुलाना नही।
उस प्रभु को ही तू भी रिझा ले।।

धन अनीति का सुख तुझको देगा नही।
चोट कुदरत की तू सह सकेगा नही।
अब भी मौका है खुद को बचा ले।।

प्रेम करने से मंज़िल को पा जाएगा।
ध्यान करने से प्यारा नजर आएगा।
तू घड़ी भर ही गोता लगा ले।।

मनवा ओ३म् नाम तू

मनवा ओ३म् नाम तू गा ले।
सुमिरन कर ले परमपिता को, मूरख अलख जगा ले।।

क्या जाने तू प्रभु की माया,
इस पल धूप तो उस पल छाया।
अवसर ऐसा फिर न मिलेगा,
जीवन सफल बना ले।।

क्या देगी दुनिया दस रंगी,
क्या देंगे ये साथी संगी।
ओ३म् नाम रस पी मतवारे,
ओ३म् नाम फल खा ले।।

तन की क्षण भंगुर नौका पर,
परदेसी आया तू चढ़कर।
ओ३म् नाम पतवार बनाकर,
नौका पार लगा ले।।

हिम्मत ना हारिये

हिम्मत न हारिये, प्रभु न विसारिये।
हँसते मुस्कराते हुए ज़िन्दगी गुजारिये।

हँसते मुस्कराते हुए जीना जिनको आ गया।
टूटे हुए दिलों को सीना जिन को आ गया।।
ऐसे देवताओं के चरणों को पखारिये।
उनकी तरह नेक बन के ज़िन्दगी गुजारिये।। .....

काम ऐसे कीजिये कि जिनसे हो सब का भला।
बातें ऐसी कीजिये, जिनमें हो अमृत भरा।।
मीठी बोली बोल सबको, प्रेम से पुकारिये।
कड़वे बोल बोल के न, ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

मुश्किलों मुसीबतों का, करना हो जो खात्मा।
हर समय कहिये तेरा शुक्र है परमात्मा।।
गिले शिकवे कर अपना हाल न बिगाड़िये।
जैसे प्रभु रखे वैसे ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

शुभ कर्म करते हुये, दुःख भी अगर पा रहे।
पिछले पाप कर्मो का, भुगतान वो भुगता रहे।।
आगे मत उठाइये, पिछले बोझ उतारिये।
गलतियों से बचते हुए, ज़िन्दगी गुजारिये।। .....

दिल की नोट बुक पे बातें नोट कर लीजिए।
बनके सच्चे सेवक सच्चे, दिल से अमल कीजिए।।
करके अमल बनके कमल, तरिए और तारिए।
जग में जगमगाती हुई, ज़िन्दगी गुजारिये।। ....

परमेश्वर के गुण

तर्ज : दिल लूटने वाले

परमेश्वर के गुण गाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।
मन से छल–कपट मिटाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

दिन रात संवारा करते हो अपने बिगड़े हुए कामों को।
औरों की बिगड़ी बनाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

सुखियों से हँसकर बोलते हो दुःखियों से भी बातें किया करो।
दुःखियों का दुःख मिटाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

धन जोड़ जोड़कर रखने से सौ चिन्ताएँ लग जाती हैं।
धन को शुभ अर्थ लगाने से, खुशियों की दौलत मिलती है।।

दुर्जन की संगति करने से बल, बुद्धि, यश और आयु घटे।
सत्संग में प्यारे जाने से खुशियों की दौलत मिलती है।।

कार्य में नियुक्त होने पर नौकरों की,
दुखः की घड़ी में बान्धवों की,
विपत्ती काल में मित्रों की,
तथा धन नष्ट होने पर पत्नी की,
परीक्षा होती है।

जरा तो इतना

जरा तो इतना बता दो भगवन।
लगन ये कैसी लगा रहे हो।।
मुझी में रहकर मुझी से मेरी।
यह खोज कैसी करा रहे हो।।

हृदय भी तुम हो, तुम ही स्पंदन।
प्रेम भी तुम हो तुम ही हो प्रियतम।।
पुकारता मन तुम ही को क्यों है।
तुम ही जो मन में समा रहे हो।।

सीप भी तुम हो तुम्ही हो मोती।
दीप भी तुम हो, तुम ही हो ज्योति।।
तुम्ही को लेकर तुम्ही को ढूंढू।
नयी यह लीला बता रहे हो।।

मन भी तुम हो तुम्ही हो रसना।
गीत तुम हो तुम ही हो रचना।।
स्तुति तुम्हारी तुम्ही से गाऊँ।
नयी यह रीति बता रहे हो।।

कर्म भी तुम हो तुम ही हो कर्त्ता।
धर्म भी तुम हो तुम ही हो धरता।।
निमित्त कारण मुझे बना कर।
यह नाच कैसा नचा रहे हो।।

रे मनवा ईश्वर के गुण गाना

रे मनवा ईश्वर के गुण गाना।
यदि अपनी जीवन नैया को चाहे पार लगाना।।

अबर खरब धन जोड़ के धर ले। दुनिया भर का राज तू कर ले।
इस पारे को अंगारे पर जो चाहे ठहराना।।

द्रव्य धरा से धरा रहेगा और बैंको में भरा रहेगा।
जिसको कहता मेरा मेरा इक दिन होय बेगाना।।

मोह माया में होकर अंधा भूल गया निज करम का धंधा।
जिस दिन पड़े गले में फंदा उस दिन हो पछताना।।

प्राणों का जो प्राण हमारा यदि उसमें हो ध्यान हमारा।
ठाकुर उसकी अमृत छाया बिन नहीं और ठिकाना।।

बहने वाला मृदु जल भी बर्फ बनकर धीरे–धीरे पाषाण बन जाता है और पाषाण द्रवित होकर जल बन जाता है। विधाता की शक्ति से निर्मित मार्ग में किसका स्वभाव स्थिर रह सका है?

मुझे तूने मालिक

मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है।
तेरा शुक्रिया है तेरा तेरा शुक्रिया है।

न मिलती अगर दी हुई दात तेरी।
तो क्या थी जमाने में औकात मेरी।
यह बन्दा तो तेरे सहारे जिया है,।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा.....

यह जायदाद दी है यह औलाद दी है।
मुसीबत में हर वक्त इमदाद की है।
तेरा ही दिया मैंने खाया पीया है।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा .....

मेरा भूल जाना तेरा न भुलाना।
तेरी रहमतों का कहाँ है ठिकाना।
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा .....

तेरी बन्दगी से मैं बन्दा हूँ मालिक।
तेरे ही करम से मैं जिन्दा हूँ मालिक।
तुम्ही ने तो जीने के काबिल किया है।।
तेरा शुक्रिया है, तेरा .....

आन बसो मन मेरे

तर्ज : सिर जावे तॉ जावे मेरा वैदिक धर्म न जावे

आन बसो मन मेरे
प्रभु आन बसो मन मेरे।

विषयां ने मैंनू आन दबाया।
एहनॉ तो डर के नस आया।
मैं चरणॉ विच तेरे।
प्रभु आन बसो मन मेरे।

मोह माया ने जाल बिछाया।
काम क्रोध ने घेरा पाया।
डाकू चोर लुटेरे।
प्रभु आन बसो मन मेरे।

तेरे बिना प्रभु होर न कोई।
हुन जो सुने मेरी अरजोई।
वेखेया चार चुफेरे।।
प्रभु आन बसो मन मेरे।

माँ को जाना, पिता को जाना,
भाई को जाना, बहन को जाना, सबको जाना,
पर उसको नहीं जाना जिसके पास जाना।

जीवन की रुलाती घड़ियों में

तर्ज – बाबुल की दुआएं लेती जा

जीवन की रुलाती घड़ियों में मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे।
कुछ चाह न बाकी रहती है प्रभु आके तेरे दरबार मुझे।।
जीवन को रुलाती.....

मेरे दिल के गगन पर आके कभी जब गम की घटा छा जाती है।
इक पल में प्रभु जी तेरी दया तब बनके हवा आ जाती है।
तुझे रक्षक सब का कहने में फिर क्यों हो भला इनकार मुझे।
जीवन को रुलाती.....

प्रभु दर पे तेरे आने वाला झोली अपनी भर लेता है।
तेरे दर से प्रभु मैं क्या मांगू बिन मांगे तू सब कुछ देता है।
जो तेरी इच्छा है दाता हरदम है वही स्वीकार मुझे।
जीवन को रुलाती .....

जब तक मैं 'पथिक' दुनियां में रहूं बस एक यही मेरा काम रहे।
मेरे दिल में तुम्हारी याद रहे होंटों पे प्रभु तेरा नाम रहे।
रहे प्यार तुम्हारे चरणों में चाहे जन्म मिले सौ बार मुझे।
जीवन को रुलाती.....

उस के चरणों में

तर्ज – इस भरी दुनया में कोई हमारा न हुआ

उसके चरणों में तो हुआ ध्यान तुम्हारा ही नहीं।
तुझ को धन प्यारा है भगवान तो प्यारा ही नहीं।
उस के चरणों में.....

क्यों सुनेगा भला परमात्मा आवाज़ तेरी।
तूने उसको कभी दिल से तो पुकारा ही नहीं।।
उस के चरणों में.....

क्या हुआ कितने ही मैदान अगर मार लिए।
अपने इस मन को तो अब तक तूने मारा ही नही।
उस के चरणों में.....

यह हवा आज तो उलटी ही ज़माने में चली।
भले इनसान का दुनियां में गुजारा ही नहीं।
उस के चरणों में.....

वह क्या उस पार किनारे पे भला पहुंचेगा।
जिसने मंझधार में कश्ती को उतारा ही नहीं।
उस के चरणों में.....

तू है जिसने कभी उसको न 'पथिक' याद किया।
वह है जिस ने कभी तुझको तो बिसारा ही नहीं।
उस के चरणों में.....

किसी के काम जो आये

तर्ज – बहारो फूल बरसाओ

किसी के काम जो आए उसे इनसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए उसे इनसान कहते हैं।
किसी के काम जो आए.....

कभी धनवान है कितना कभी इनसान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुःख है इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये उसे इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.....

यह दुनियां एक उलझन है कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हंस हंस के जीता है कोई जीता है रो रो कर।
जो गिर कर फिर संभल जाये इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.....

अगर ग़लती रुलाती है तो यह राह भी दिखाती है।
बशर ग़लती का पुतला है यह अक्सर हो ही जाती है।
जो ग़लती करके पछताये उसे इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.....

अकेले ही जो खा खा कर सदा गुज़रान करते हैं।
यों भरने को तो दुनियाँ में पशु भी पेट भरते हैं।
'पथिक' जो बाँट कर खाये उसे इनसान कहते हैं।।
किसी के काम जो आए.....

करम खोटे तो

तर्ज – सुहानी चाँदनी रातें

करम खोटे तो ईश्वर के भजन गाने से क्या होगा।
किया परहेज़ न कुछ भी दवा खाने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर के .....

समय पर एक ही ठोकर बदल देती है जीवन को,
जो ठोकर से भी न समझे तो समझाने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर के .....

समय बीता हुआ हरगिज़ कभी न हाथ आएगा,
लिया चुग खेत चिड़ियों ने तो पछताने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर के .....

मुसीबत तो टले अपनी सदा हिम्मत ही रखने से,
मुकद्दर पर भरोसा कर के सो जाने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर के .....

तू खाली हाथ आया है व खाली हाथ जाएगा,
'पथिक' मालिक करोड़ों का भी कहलाने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर के .....

प्रभु नाम कीर्तन

तर्ज : रघुपति राघव राजा राम

हे जगदीश्वर हे भगवान।
बहुत निराली तेरी शान।
विश्व विधाता ईश महान्।
बहुत निराली तेरी शान।

अमर अनादि अनन्त अनूपा।
नित्य सनातन सत्य स्वरूपा।
अलख निरजंन शक्तिमान।
बहुत निराजी तेरी शान...

मात पिता बन्धु और भ्राता।
रक्षक पालक तू सुख दाता
तू सब का प्राणों का प्राण
बहुत निराली तेरी शान...

मंगल जनक अमंगल हारी
कष्ट विदारक पर उपकारी
दीन–दयाकार कृपानिधान
बहुत निराली तेरी शान...

पतित सुपावन शंकर स्वामी।
परम सहायक अन्तर्रयामी।
''पथिक'' करें तेरा गुणगान।
बहुत निराली तेरी शान...

समय बड़ा बलवान रे

समय बड़ा बलवान रे, समय बड़ा बलवान ।
इक दिन सबको जाना होगा निर्धन या धनवान।।

है दुर्लभ ये मानव जीवन, बड़ा कठिन पाना मानव तन।
पाकर धन वैभव यौवन तू, मत करना अभिमान रे।।

जिस दिन आया तू धरती पर, काल चला हमजोली बनकर।
पता नहीं कब धर बैठेगा मूर्ख रूख पहचान रे।।

काम बहुत है जीवन थोड़ा, उस पर मन का चंचल घोड़ा।
रुक जा प्राणी गा ले प्रभु का, सुन्दर प्यारा नाम रे।।

जब चलने का पल आयेगा, कोई रोक नहीं पायेगा।
प्रभु चरणों में शरण तिहारी, सोच समझ नादान रे।।

मुसीबत विपत्ती काल के लिए धन की रक्षा करो, धन से अधिक पत्नी की रक्षा करनी चाहिए, परन्तु धन एवं पत्नी से भी अधिक अपनी रक्षा करनी चाहिए। यदि स्वयं ही नहीं रहे तो धन का और पत्नी का क्या प्रायोजन।

तेरी हीरे जैसी श्वासा

तेरी हीरे जैसी श्वासा बातों में बीती जाये।
मन रे ..... बातें में बीती जाए।।

गंगा यमुना खूब नहाया गया न मन का मैल।
घर धंधों में लगा हुआ था ज्यों कोल्हू का बैल।
तेरे जीवन की ये आशा बातों में बीती जाय।।

पाप गठरिया सिर पर लादे रहा भटकता रोय।
प्रेम सहित उस दाता की की न तू ने खोज।
झूठा करता रोज तमाशा बातों में बीती जाय।।

किया न पौरूष आकर जग में दिया न कुछ भी दान।
मेरी–मेरी करते करते निकल जायेगे प्राण।
जैसे पानी बीच बताशा बातों में बीती जाय।।

नस–नस में वो रोम–रोम में रमा हुआ है ओ3म।
कण–कण में घट–घट में व्यापक उसको तू पहचान।
उससे मिलने की अभिलाशा बातों में बीती जाये।।

जहाँ आदर सम्मान न हो , जहाँ आजीविका के साधन न हों जहाँ बन्धु बान्धव न हो, जहाँ विद्या प्राप्ति की संभावना न हो ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए।

जीवन खत्म हुआ तो

जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया।
जब शमां बुझ गई तो महफिल में रंग आया।

गाड़ी निकल गई तो घर से चला मुसाफिर।
मायूस हाथ मलता वापस बैरंग आया।।

मन की मशीनरी ने तब ठीक चलना सीखा।
जब बूढ़े तन के हर एक पुर्जे पर जंग आया।

आयु ने 'नत्थासिंह' जब हथियार फैंक डाले।
यमराज फौज ले के करने को जंग आया।।

सच्चा साथी।
रोगी होने पर जो साथ हो
दुखी होने पर जो साथ हो
अकाल पड़ने पर जो साथ दे
शत्रु से संकट में जो साथ दे
मुकदमें में फंसने पर गवाही दे
और मृत्यु होने पर जो शमशान में साथ दे
वही सच्चा बन्धु है।

तू प्यार का सागर है

तू प्यार का सागर है तेरी इक बूंद के प्यासे हम।
लौटा जो दिया तूने चले जायेंगे जहां से हम।।
तू प्यार का सागर है...

घायल मन का पागल पंछी उड़ने को बेकरार।
पंख है कोमल आँख है धुंधला जाना है सागर पार।
अब तू ही इसे समझा राह भूले थे कहाँ से हम।।
तू प्यार का सागर है...

इधर झूम के गाये जिन्दगी, उधर है मौत खड़ी।
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी।
कानों में जरा कह दे कि आये कौन दिशा से हम।।
तू प्यार का सागर है...

इस तरह से न कमाना कि पाप आए
इस तरह से न खर्च करना कि कर्ज आए
इस तरह से न खाना कि मर्ज आए
इस तरह से मत चलना कि देर हो जाए।

साथ ले लो पिता

साथ ले लो पिता, आगे बढ़ जाऊँगा।
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊँगा।।

राहे चिकनी खड़ी और पथरीली हैं
कांटो झाड़ी भरी और जहरीली है
दो सहारा कि इनमें मैं फँस जाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

भोग विषयों की उठती है इक इक लहर
मुझ को उलझा डुबाने चली हर प्रहर
दे दो पतवार वरना न तन पाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

दुनिया इस ओर कहती है आ मौज ले
पर उधर धर्म कहता है दुःख मोल ले
तुम कहोगे मुझे जैसा कर पाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

सत्य कहता हूँ भूला जभी मैं तुम्हें
पायी दुनिया मगर एक न पाया तुम्हें
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊँगा।।
वरना सम्भव ...

तेरे चरणां विच

तर्ज : यूं ही कोई मिल गया था

तेरे चरणां विच रवाँ मैं तेरा नाम जपते–जपते।
निकलनगे प्राण मेरे तैंनू याद करदे–करदे।। तेरे चरणां विच...

बिसरे कदी ना मैनू तेरा नाम हे प्रभु जी–2।
मेरी आंख वी ना झपके दीदार करदे–2।। तेरे चरणां विच...

दुनियां दी भीड़ अन्दर दामन ना तेरा छोड़ाँ–2।
रबा मैं डिग न पवां हंकार करदे–करदे।। तेरे चरणां विच...

हे दो जहां दे मालिक तू सब नु जानदा है–2।
कई टुट गये जहां तो तकरार करदे करदे।। तेरे चरणां विच...

तेरी भक्ति दा प्याला पींदा ए कोई–कोई।
उम्रां ने बीत गइयां फरियाद करदे–करदे।। तेरे चरणां विच...

तेरी शरण विच आके विश्राम मन नु आवे।
मुदतां ने बीत गइयां फरियाद करदे–करदे।। तेरे चरणां विच...

जीवन तुम्हारा तुम्हारे ही अर्पण

तर्ज : आवाज देकर हमें तुम

यह जीवन तुम्हारा तुम्हारे ही अर्पण।
इसे अपने चरणों के काबिल बना दो।।

हो करूणा के सागर दया के हो दाता।
तुम्हीं जग के पालक तुम्ही हो विधाता।
यह सोया है मनवा इसे तुम जगा दो।।

मैं पथ से गिरूं ते मुझे थाम लेना।
दया करके सद्बुद्धि देते ही रहना।
जो सच्चा हो मार्ग वही तुम दिखा दो।।

तुम्हारे हवाले है जीवन की नैया।
इसे पार कर दो ऐ मेरे खिवैया।
कहीं डूब जाये ना इसको बचा लो।।

दरश को मैं आया हूँ जन्मों का मारा।
भटकता है मनवा यह अब भी हमारा।
इसे वश में करने की युक्ति बता दो।।

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं मैं जिसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं किसकी।।

तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी।।

तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति।।

दीनबंधु दुःख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
करूणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा मैं तेरे।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे

श्री कंचन कुमार की भजन पुस्तकें

1. **उमर का पंछी (वैराग्य भजन)**
   वैराग्य भजनों का एक पुस्तक में संकलन।
2. **प्रार्थना सुमन (प्रार्थना भजन पुस्तक)**
   प्रार्थना भजनों का अद्वितीय संकलन।
3. **ऋषि के तराने**
   प्रभात फेरी व शोभा यात्रा भजन
4. **प्रेम पुष्पांजलि (भजन)**
   सद्गुरु भजनों का संग्रहणीय संकलन।

श्री कंचन कुमार के आने वाले कैसेट्स

1. **अनन्त की ओर (प्रवचन)**
2. **तनाव कम कैसे करें (प्रवचन)**
3. **ऋषि के तराने (भजन)**

कैसेट्स सी.डी. व पुस्तक प्राप्ति स्थान

गायत्री सत्संग सभा

208-B, पश्चिम विहार एक्सटैंशन
नई दिल्ली-110063
फोन : 25217058